

प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला - Editor in Chief
Sanjay Kumar Bathla
सह संपादक: पिकी कुंडू - Co-Editor Pinki Kundu

दिल्ली में 1373 परिवारों का हक अटका, DDA ने 155 करोड़ लेकर भी फाइलें दबाई - हाईकोर्ट का फटकार भरा आदेश

IDLI पोर्टल 2 जनवरी 2026 से बंद, 308 मंजूरीयों पर भी रजिस्ट्री नहीं - कोर्ट बोला, फ्रीहोल्ड जनता का अधिकार, फाइलों में नहीं अटक सकता

रिपोर्ट के छापड़ा

प्रस्तावना: दिल्ली में अपने ही घर का मालिक बनने का सपना अब कोर्ट के भरोसे है। आपका भेजा गया आदेश

CONT.APP.(C) 15/2026 - DDA vs Mala Sahni Seth & Others में जस्टिस प्रतिभा एच. सिंह और

जस्टिस विकास महाजन की बेंच ने 28 सितंबर 2026 को साफ कहा - लीजहोल्ड से फ्रीहोल्ड कवर्जन नगरनिक का महत्वपूर्ण अधिकार है, इसे सरकारी फाइलों में 8 महीने तक लटकाना गंभीर धिंता का विषय है।

1: केस का तथ्य क्या है?

1. 1373 आवेदन लंबित, 155.06 करोड़ वसूल: 2020-2026 के बीच DDA ने 1373 लोगों से कवर्जन चार्ज के रूप में 155.06 करोड़ ले लिए। इनमें से 308 में कवर्जन मंजूर भी हो गया, पर कवर्जेंस डीड नहीं बनाई गई।

2. IDLI पोर्टल 2 जनवरी 2026 से बंद:

DDA का Interactive Disposal of Land Information System (IDLI) पोर्टल, जहाँ ऑनलाइन आवेदन और भुगतान होता था, MoHUA (आवास और शहरी कार्य मंत्रालय) के पत्र के बाद बंद कर दिया गया। तब से कोई नया आवेदन नहीं लिया जा रहा।

3. कोर्ट की 6 महीने की कोशिश नाकाम: कोर्ट ने 3 जुलाई 2026 को पहली बार संज्ञान लिया। Vice Chairman DDA, Mr. N. Saravana Kumar और Secretary MoHUA, Ms. D. Thara से स्टेटस रिपोर्ट मांगी। पर 30 जुलाई, 7 सितंबर तक कोई नीति

नहीं बनी। MoHUA ने हलफनामे में कहा - सरकारी विवेक से दर तय होगी, पर टाइनलाइन नहीं दी।

2: हाईकोर्ट का अंतिम आदेश - जनता के हित में आदेश 1: पुराने सभी 1373 आवेदन 2 महीने में निपटाओ: कोर्ट ने कहा - जिन लोगों में जिस तारीख को जिस दर पर पैसा जमा किया, उसी पुरानी नीति (prevalent policy as on date of filing) के हिसाब से उनका कवर्जन किया जाए। नई नीति का इंतजार नहीं होगा। फैसला 28 सितंबर से 2 महीने के अंदर।

आदेश 2: नई नीति के लिए 2 महीने और: नए आवेदनों के लिए IDLI पोर्टल शुरू करने और नई पॉलिसी बनाने के लिए MoHUA को 2 महीने का और समय दिया। अगली सुनवाई 11 दिसंबर 2026, पार्ट-रेंट रहेगी। Ms. D. Thara और Mr. N. Saravana Kumar अगली बार से कोर्ट नया आवेदन नहीं लिया जा रहा।

आदेश 3: नई नीति केवल भविष्य के लिए (Prospective): कोर्ट ने Neera Sharma केस का हवाला देते हुए कहा - जो नई नीति आएगी, वह केवल भविष्य के आवेदनों पर लागू होगी, पुराने 1373 पर नहीं।

3: संवैधानिक और कानूनी विश्लेषण - जनहित में

जानकारी

1. संपत्ति का अधिकार और अनुच्छेद 21, 300A: सुप्रीम कोर्ट कह चुका है - अपनी संपत्ति को बेचना, ट्रांसफर करना, वसीयत करना नागरिक का कानूनी अधिकार है। लीजहोल्ड होने से बैंक लोन नहीं, बिक्री में अड़थक, पारिवारिक बंटवारे में रुकावट। DDA का पोर्टल बंद रखना अप्रत्यक्ष रूप से अनुच्छेद 300A का उल्लंघन।

2. DDA और MoHUA की लापरवाही: कोर्ट ने कड़ी टिप्पणी की - MoHUA में दिल्ली के लिए अलग 'Delhi Division' बना है, फिर भी 8 महीने तक कोई निर्णय नहीं। 6 महीने से कोर्ट आदेश दे रहा है, पर कोई प्रगति नहीं। यह 'serious concern' है।

3. जनता पर असर: सेकड़ों परिवारों ने पूरी फीस जमा की, पर न रजिस्ट्री हो रही, न बिक्री हो पा रही। फैमिली सेटलमेंट, लोन लोन, रजिस्ट्री सब अटक के।

निष्कर्ष - परिवहन विशेष की टिप्पणी: यह मानना केवल DDA का नहीं, पूरी दिल्ली के सिस्टम की नाकामी का उदाहरण है - जैसा आपने मुंशी पुलिया में दिखा था। छोटा काम भी फाइलों में अलगा है। हाईकोर्ट का आदेश साफ है - पैसा लिया पर काम करो। 3 महीने के अंदर 1373 परिवारों को फ्रीहोल्ड का मालिकाना

हक देना होगा।

जनहित अपील: यदि आपका भी लीजहोल्ड से फ्रीहोल्ड आवेदन 2020-2026 में लंबित है और 155 करोड़ में आपका पैसा भी शामिल है, तो इस आदेश की कॉपी (28 Sep 2026) को DDA में लगाएं और 2 महीने की समय-सीमा का हवाला दें।

बॉक्स सार

'उच्च न्यायालय दिल्ली द्वारा दिए गए आदेश का संक्षिप्त विवरण'

DDA फ्रीहोल्ड केस - दिल्ली हाईकोर्ट का बड़ा आदेश - 28 सितंबर 2026

केस: http://CONT.APP.(C) 15/2026 - DDA vs माला सारुनी सेठ व अन्य

बेंच: जस्टिस प्रतिभा एम. सिंह और जस्टिस विकास महाजन, दिल्ली हाईकोर्ट

मुख्य तथ्य (कोर्ट रिकॉर्ड से):

- 2 जनवरी 2026 से IDLI पोर्टल बंद - MoHUA (दिल्ली डिवीजन) के पत्र के कारण
- 2020-2026 के बीच 1373 आवेदन आए, DDA ने 155.06 करोड़ कवर्जन चार्ज वसूला
- इनमें से 308 में मंजूरी भी दे दी, पर कवर्जेंस डीड नहीं बनाई

- 3 जुलाई 2026 से कोर्ट लगातार आदेश दे रहा है, पर 6 महीने तक कोई नीति नहीं बनी

हाईकोर्ट के 3 बड़े आदेश (पेज 14, पैरा 25-29):

- सभी 1373 पुराने लंबित आवेदनों को 2 महीने (28 नवंबर 2026 तक) में निपटाओ - जिस तारीख को पैसा जमा हुआ था, उसी पुरानी नीति के हिसाब से।
- नए आवेदनों के लिए नई नीति बनाओ और IDLI पोर्टल खोलो - इसके लिए भी 2 महीने का समय।
- अगली सुनवाई 11 दिसंबर 2026, पार्ट-रेंट रहेगी। सचिव MoHUA - Ms. D. Thara और VC DDA - Mr. N. Saravana Kumar खुद कोर्ट में हाजिर होंगे।

कोर्ट की टिप्पणी: "155 करोड़ लेकर भी गौजूदा आवेदनों को रोकना पूरी तरह अग्राह्यपूर्ण है। लीजहोल्ड से फ्रीहोल्ड मालिकाना हक का महत्वपूर्ण पहलू है - सीनियर सिटिजन अपनी पॉपर्टी नहीं बेच पा रहे, फैमिली सेटलमेंट अटक है।" (पैरा 24)

नोट: दिल्ली उच्च न्यायालय आधिकारिक आदेश 30.09.2026 को अपलोड किया गया - http://VERDICTUM.IN - पृष्ठ 6,7,12,14।

काम स्थायी तो कर्मचारी अस्थायी क्यों?: ठेकेदारी व आउटसोर्सिंग प्रथा खत्म कर वर्षों से सेवाएं दे रहे कर्मचारियों को नियमित करे सरकार : राजबीर भारतीय

रिपोर्ट: राजेश सलूजा, परिवहन विशेष समाचार पत्र हिसार

मुख्य समाचार विश्लेषण: हिसार में एक निजी कार्यकर्म में आल इंडिया अम्बेडकर महासभा (रौन), चंडीगढ़ प्रदेश अध्यक्ष राजबीर सिंह भारतीय ने कहा कि स्थायी प्रकृति का काम करने वाले कर्मचारियों को वर्षों तक ठेकेदारी में रखना सामाजिक अत्याचार और शोषण है। उन्होंने मांग की कि सरकार स्थायी जरूरत वाले कार्यों के लिए नियमित वर सुजित कर समयबद्ध नियमितीकरण नीति बनाए।

उन्होंने बताया कि सफाई सैनिक, डोर-टू-डोर कचरा कर्मचारी, डाक्टर, सीढ़र कर्मचारी, मांती, पानी व्यवस्था, डॉक्टर, नर्स, फार्मासिस्ट, शिक्षक, प्रोफेसर और तकनीकी स्तरक वर्षों से आवश्यक एवं स्थायी सेवा दे रहे हैं।

"काम पक्का, कर्मचारी कच्चे क्यों?" - यह केवल सवाल नहीं, रोजगार की गरिमा का प्रश्न है।

तथ्य और संवैधानिक प्रावधान:

तथ्य 1: मूल अधिकारों का रक्षण

- अनुच्छेद 14: समानता का अधिकार - एक से काम करने वाले दो कर्मचारियों में भेद नहीं हो सकता।

- अनुच्छेद 16: लोक नियोजन में समान अवसर - वर्षों से काम कर रहे व्यक्ति को अवसर से वंचित करना असंवैधानिक।

- अनुच्छेद 31: जीवन और आजीविका का अधिकार - सुप्रीम कोर्ट ने ओल्गा टेलिस बनाम बोम्बे मुनिसिपल कॉर्पोरेशन (1985) में कहा था कि आजीविका का अधिकार जीवन के अधिकार में शामिल है। अस्थायी रखकर हर महीने नौकरी जाने का डर, अनुच्छेद 31 का उल्लंघन है।

- अनुच्छेद 33: शोषण के विरुद्ध अधिकार - ठेकेदारी में कम वेतन देकर बंधुआ जैसी स्थिति बनाना शोषण है।

तथ्य 2: ब्याधिक आदेश - सुप्रीम कोर्ट का Uma Devi केस क्या कहता है?

Secretary, State of Karnataka vs Uma Devi (2006) 4 SCC 1 - इस केस में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पिछली तारीख से बेकडोर ट्रेडी से नियमितीकरण नहीं लेना चाहिए। लेकिन इसी फैसले में कोर्ट ने यह भी कहा था कि सरकार का कर्तव्य है कि

यदि 10 साल से अनियमित नियुक्त कर्मचारी स्वीकृत पद पर लगातार काम कर रहा है, तो सरकार को एकमुश्त (One Time) नीति बनाकर नियमितीकरण पर विचार करना चाहिए।

खल ही में 2024-25 के फैसलों में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है:

> "Uma Devi judgment cannot be used as a shield to justify exploitative engagements persisting for years"

अर्थात, उमा देवी फैसले को ढाल बनाकर वर्षों तक शोषणकारी ठेकेदारी चलाना गलत है। यदि काम स्थायी है, तो कर्मचारी को भी स्थायी करना होगा। पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट ने भी हरियाणा सरकार को निर्देश दिया है कि 2006 तक 10 साल पुरा कर चुके कर्मचारियों पर विचार करे। 178C5

तथ्य 3: राज्यप्रीति अधिसूचना और वैधानिक अधिकार - अनुच्छेद 209: भर्ती और सेवा शर्तों को विनियमित करने के लिए कानून बनाने की शक्ति। हरियाणा सरकार हरियाणा अनुबंधित कर्मचारी (सेवा सुरक्षा)

अधिनियम जैसी अधिसूचना जारी कर सकती है।

- समान काम समान वेतन: सुप्रीम कोर्ट Randhir Singh vs UOI (1982) और State of Punjab vs Jagjit Singh (2016) में कहा - समान प्रकृति के कार्य के लिए समान वेतन संवैधानिक अधिकार है।
- EPF Act 1952 और ESI Act 1948: ठेकेदारी में भी EPF, ESI काटना अनिवार्य है। कई एजेंसियां यह नहीं देती, यह अपराध है।
- Contract Labour (Regulation & Abolition) Act 1970 की धारा 10: जहाँ काम स्थायी प्रकृति का है, वहीं ठेका प्रथा समाप्त करने की है।

अधिसूचना सरकार जारी कर सकती है।

मुख्य बिंदु - राजबीर भारतीय की 5 प्रमुख मांगें:

- युवा को रोजगार: लंबित भर्तियां शीघ्र पूरी हों, रिक्त पद भरे जाएं, ओवरवर्क होने पर आयु सीमा में राहत दी जाए।
- किसान को ग्रंथित मूल्य: खाद, बीज, डीजल, सिंचाई, बिजली की बढ़ती लागत पर निश्चय, समय पर खरीद और भुगतान।

3. बजट - कर्मचारी को समान और सुरक्षा: समान काम समान वेतन, EPF-ESI, सामाजिक सुरक्षा और नियमितीकरण की समयबद्ध नीति।

4. हिसार की गुरुमृत सुविधा: पेयजल, सीढ़र, जल निकासी, सड़क, सफाई, स्ट्रीट लाइट, पार्क, स्वास्थ्य और शिक्षा की वार्डवार समीक्षा।

5. संवैधानिक मांग: यह लड़ाई लोकतांत्रिक और संवैधानिक तरीके से जितना प्रयासन, नगर निगम और हरियाणा सरकार के समर्थन रखी जायगी।

निष्कर्ष - परिवहन विशेष का नोट:

राजबीर भारतीय ने कहा कि आल इंडिया अम्बेडकर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश बहादुर और हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष बलन रैना नागरकर वाल्मीकि के मार्गदर्शन में संगठन सामाजिक न्याय, समानता और संवैधानिक अधिकारों की लड़ाई जारी रखेगा।

सौदा व्यवस्था समाप्त हो - कर्मचारियों को नियमित किया जाए - प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला - सह संपादक: पिकी कुंडू - प्रकाशक: परिवहन विशेष जनहित याचिका और आंदोलन दोनों के लिए कानूनी आधार

परिवहन विशेष

National Newspaper

Transport Special National Newspaper | RNI DELHIN/2023/86499

दिनांक: 06 अक्टूबर 2026

पृष्ठ - 01

काम स्थायी तो कर्मचारी अस्थायी क्यों?

ठेकेदारी व आउटसोर्सिंग प्रथा खत्म कर वर्षों से सेवाएं दे रहे कर्मचारियों को नियमित करे हरियाणा सरकार - राजबीर भारतीय

हिसार



हिसार

संवैधानिक प्रावधान

- अनुच्छेद 14 - समानता का अधिकार
- अनुच्छेद 21 - जीवन व अस्तिता का अधिकार
- अनुच्छेद 16 - लोक नियोजन से समान अवसर
- अनुच्छेद 22 - लोगों के विरुद्ध अधिकार

मांगें एवं अधिकार

- समान काम समान वेतन
- EPF ESI अधिकार
- Supreme Court - Uma Devi vs Karnataka
- Article 309 - सेवा शर्तों हेतु कानून

आल इंडिया अम्बेडकर महासभा

आध्य: राजबीर भारतीय - हरियाणा, हिमाचल

संवैदा व्यवस्था समाप्त हो - कर्मचारियों को नियमित किया जाए!

EDITOR IN CHIEF: संजय कुमार बाठला

CO-EDITOR: पिकी कुंडू

न्याय, समानता और अधिकार के लिए संघर्ष जारी रहेगा - परिवहन विशेष



पारुल भटनागर
(एस्ट्रो-न्यूमरो-वास्तु विशेषज्ञ)

 8750075550

 parulbhatnagar@gmail.com

वास्तु विशेष

संतुलन | समृद्धि | सुख | शांति | सकारात्मक ऊर्जा

सही दिशा, सही वास्तु, बेहतर जीवन



आपके स्वास्थ्य की 8 दिशाएँ : दिशाओं के तत्वों की सही समझ और वात पित्त कफ का संबंध

आपके स्वास्थ्य की आठ दिशाएँ

दिशाओं के तत्वों की सही समझ और वात पित्त कफ का संबंध

लेखिका: पारुल भटनागर
विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमरो वास्तु सलाहकार

1. दक्षिण-पश्चिम का तत्व – पृथ्वी

स्वास्थ्य की हमारी इस यात्रा में दक्षिण-पश्चिम को समझने की शुरुआत उसके प्रमुख तत्व की स्पष्ट पहचान से होती है।

दक्षिण-पश्चिम का तत्व **पृथ्वी** है।

दोषों से इसका संबंध भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

पृथ्वी कफ के दो घटकों में से एक है और जल उसका दूसरा घटक है। इसे समझ लेने पर स्वास्थ्य से जुड़ी यह चर्चा कहीं अधिक ताकिक हो जाती है।

2. तत्व से दोष तक

वात	पित्त	कफ
(वायु + आकाश) गति, गतिशीलता, परिवर्तन और शारीरिक क्रियाओं का प्रवाह नियंत्रित करता है।	(अग्नि + जल) ऊर्जा, ताप और रक्तसंचरण नियंत्रित करता है। जल अग्नि को नियंत्रित करने और घटने करने में भूमिका निभाता है।	(जल + पृथ्वी) जड़ता, पोषण, संतुलन, स्थिरता और संतुलन को नियंत्रित करता है।

3. दक्षिण-पश्चिम में असंतुलन होने पर क्या दिखाई दे सकता है

इस दिशा में असंतुलन कुछ शारीरिक या मानसिक प्रवृत्तियों के रूप में दिखाई दे सकता है, जैसे – भारीपन, उदरवाय, सूजन, संचय, पाचन में भारीपन, अत्यधिक अलगाव या अक्सर जैसी प्रवृत्तियाँ तथा हृदय या श्वसन से जुड़ी समस्या जैसी प्रवृत्तियाँ।

कृपया "दिखाई दे सकता है" शब्दों पर ध्यान दें। यह भाविष्यवाणी नहीं, बल्कि संभावित चारोंपरीक संबंध है।

4. एक ही दिशा अलग-अलग प्रभाव क्यों दिखा सकती है

संपत्ति की प्रत्येक स्थिति तत्व को अलग तरह से प्रभावित करती है।

दिशा	तत्व	प्रभाव
उत्तर	वायु	कमी
दक्षिण	पृथ्वी	अधिकता
पूर्व	जल	अधिकता (जमा हुआ जल = रक्तवाह)
पश्चिम	अग्नि	गमनी बढ़ता है
दक्षिण-पश्चिम	वायु	संयोजन और उल्लेख
दक्षिण-पूर्व	पृथ्वी	संयोजन और निष्कर्षण
उत्तर-पूर्व	जल	नीचा स्थान
उत्तर-पश्चिम	अग्नि	धारण और समेटने की शक्ति बढ़ती है

इसलिए दक्षिण-पश्चिम के दो अलग वास्तुदोष स्वास्थ्य पर एक जैसा प्रभाव दिखाएँ, यह आवश्यक नहीं है।

5. दोष की अधिकता और कमी को समझना जरूरी है

वात	पित्त	कफ
• अधिकता – बेचैनी, अनिद्रा, भय, रक्तवाह, अधिक गति	• अधिकता – गर्मी, जलन, उल्लेख, अधिक रक्तवाह	• अधिकता – भारीपन, बलगम, सूजन, द्रव रक्तवाह
• कमी – शरीर गति, रुकी हुई क्रियाएँ, अप्रवृत्ति	• कमी – वायुओं रक्तवाह, शीघ्र पाचन	• कमी – अपूर्ण पाचन, शीघ्र पाचन, निष्कर्षण

इसलिए किसी उपाय को अपनाने से पहले यह जानना जरूरी है कि स्थिति अधिकता, कमी या अवरोध की है।

6. पाठक के लिए एक उदाहरण

पहले समझें – शरीर क्या दिखा रहा है?

- गर्मी या ठंडक? • संचय या कमी?
- अत्यधिक गति या अवरोध? • रक्तवाह या द्रव का रक्तवाह?
- जलन या सूखे?

फिर ज्योतिषीय कुंडली, संपत्ति और सूक्ष्म क्षेत्र का निरीक्षण करें।

7. प्रक्रिया को दूसरी ओर से भी देखें

• क्या ठंडी जोड़ी गई?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?	• क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?

घटनाओं का समयक्रम उपयोगी संकेत दे सकता है। लेकिन समयक्रम का मेल भी केवल एक संकेत है, चिकित्सकीय कारण का प्रमाण नहीं।

अपने घर में यह अभ्यास करें दक्षिण-पश्चिम की दिशा सही ढंग से पहचानें।

फिर तुरंत उसे अच्छा या खराब मान लेने से बचें।

इसके बजाय पूछें। इसका प्रमुख तत्व क्या है? पृथ्वी।

मैंने इसमें क्या जोड़ा है? क्या मैंने इस तत्व को जरूरत से ज्यादा बढ़ा दिया है? क्या मैंने इसे दबा दिया है? क्या मैंने इसके विपरीत तत्व को जोड़ दिया है? क्या मैंने इस क्षेत्र को पृथ्वी तत्व से बोझिल कर दिया है? क्या मैंने अग्नि से इसे अधिक गर्म कर दिया है? क्या मैंने गति को अवरुद्ध कर दिया है? क्या मैंने आवश्यक आकाश तत्व या खुला स्थान कम कर दिया है? क्या जल बह रहा है या केवल जमा हो रहा है? अब वहाँ रहने वाले लोगों पर

8. अपने घर में यह अभ्यास करें

दक्षिण-पश्चिम दिशा पर ध्यान दें।

- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?
- क्या वातवाह का प्रवाह हुआ?

घटनाओं का समयक्रम उपयोगी संकेत दे सकता है, लेकिन यह चिकित्सकीय कारण का प्रमाण नहीं।

अपने घर में यह अभ्यास करें दक्षिण-पश्चिम की दिशा सही ढंग से पहचानें।

फिर तुरंत उसे अच्छा या खराब मान लेने से बचें।

इसके बजाय पूछें। इसका प्रमुख तत्व क्या है? पृथ्वी।

मैंने इसमें क्या जोड़ा है? क्या मैंने इस तत्व को जरूरत से ज्यादा बढ़ा दिया है? क्या मैंने इसे दबा दिया है? क्या मैंने इसके विपरीत तत्व को जोड़ दिया है? क्या मैंने इस क्षेत्र को पृथ्वी तत्व से बोझिल कर दिया है? क्या मैंने अग्नि से इसे अधिक गर्म कर दिया है? क्या मैंने गति को अवरुद्ध कर दिया है? क्या मैंने आवश्यक आकाश तत्व या खुला स्थान कम कर दिया है? क्या जल बह रहा है या केवल जमा हो रहा है? अब वहाँ रहने वाले लोगों पर

9. स्वास्थ्य से जुड़ी व्यापक सीख

मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु का उद्देश्य इतना नहीं, संतुलन को समझना है।

शरीर को वायु चाहिए, लेकिन अनियंत्रित गति नहीं।

उसे आकाश चाहिए, लेकिन अत्यधिक बिखराव नहीं।

उसे अग्नि चाहिए, लेकिन जलन नहीं।

उसे जल चाहिए, लेकिन उल्लेख नहीं।

उसे पृथ्वी चाहिए, लेकिन सूजन नहीं।

संपत्ति में भी इन्हीं पाँच तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

इसलिए दक्षिण-पश्चिम की व्याख्या केवल किसी एक वस्तु या

10. सुधार की शुरुआत विशेषण के बाद

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

कभी वास्तुकारिता, कभी संतुलन, कभी संतुलन।

11. दक्षिण-पश्चिम को समझने के बाद स्वयं से पूछें

"क्या मैंने इस तत्व को जरूरत से ज्यादा बढ़ा दिया है? क्या मैंने इसे दबा दिया है? क्या मैंने इसके विपरीत तत्व को जोड़ दिया है? क्या मैंने इस क्षेत्र को पृथ्वी तत्व से बोझिल कर दिया है? क्या मैंने अग्नि से इसे अधिक गर्म कर दिया है? क्या मैंने गति को अवरुद्ध कर दिया है? क्या मैंने आवश्यक आकाश तत्व या खुला स्थान कम कर दिया है? क्या जल बह रहा है या केवल जमा हो रहा है? अब वहाँ रहने वाले लोगों पर

12. आगे की यात्रा

मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु सुझाव नहीं है।

अपने घर में यह अभ्यास करें दक्षिण-पश्चिम की दिशा सही ढंग से पहचानें।

फिर तुरंत उसे अच्छा या खराब मान लेने से बचें।

इसके बजाय पूछें। इसका प्रमुख तत्व क्या है? पृथ्वी।

मैंने इसमें क्या जोड़ा है? क्या मैंने इस तत्व को जरूरत से ज्यादा बढ़ा दिया है? क्या मैंने इसे दबा दिया है? क्या मैंने इसके विपरीत तत्व को जोड़ दिया है? क्या मैंने इस क्षेत्र को पृथ्वी तत्व से बोझिल कर दिया है? क्या मैंने अग्नि से इसे अधिक गर्म कर दिया है? क्या मैंने गति को अवरुद्ध कर दिया है? क्या मैंने आवश्यक आकाश तत्व या खुला स्थान कम कर दिया है? क्या जल बह रहा है या केवल जमा हो रहा है? अब वहाँ रहने वाले लोगों पर

स्वास्थ्य की हमारी इस यात्रा में दक्षिण-पश्चिम को समझने की शुरुआत उसके प्रमुख तत्व की स्पष्ट पहचान से होती है।

दक्षिण-पश्चिम का तत्व पृथ्वी है

दोषों से इसका संबंध भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पृथ्वी कफ के दो घटकों में से एक है और जल उसका दूसरा घटक है।

इसे समझ लेने पर स्वास्थ्य से जुड़ी यह चर्चा कहीं अधिक ताकिक हो जाती है।

तत्व से दोष तक

वात वायु और आकाश से बनता है। यह गति, गतिशीलता, परिवर्तन और शारीरिक क्रियाओं के प्रवाह को नियंत्रित करता है।

पित्त अग्नि और जल से बनता है।

यह ऊष्मा, पाचन और रूपांतरण को नियंत्रित करता है, जबकि जल उस अग्नि को नियंत्रित करने और वहन करने में भूमिका निभाता है।

कफ जल और पृथ्वी से बनता है।

यह जड़ता, पोषण, स्थिरता, रिनगता और संचय को नियंत्रित करता है।

इसलिए किसी असंतुलन का अर्थ यह नहीं कि कोई तत्व अपनेआप में "खराब" है। वह अत्यधिक, कम, अवरुद्ध, अधिक गर्म, बोझिल या अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाने में असमर्थ हो सकता है।

यह अंतर पूरी समझ को बदल देता है।

दक्षिण-पश्चिम में असंतुलन होने पर क्या दिखाई दे सकता है

इस श्रृंखला में अपनाए गए पारंपरिक मेडिकल वास्तु दृष्टिकोण के अनुसार, इस दिशात्मक क्षेत्र में असंतुलन कुछ शारीरिक या मानसिक प्रवृत्तियों के रूप में दिखाई दे सकता है। उदाहरण के लिए भारीपन, ठहराव, सूजन, संचय, पाचन में भारीपन, अत्यधिक अम्लता या अल्सर जैसी प्रवृत्तियाँ तथा आसपास के सूक्ष्म क्षेत्रों में हृदय या श्वसन से जुड़ी जमाव जैसी प्रवृत्तियाँ।

कृपया "दिखाई दे सकता है" शब्दों पर ध्यान दें। ये संभावित

पारंपरिक संबंध हैं, यह भविष्यवाणी नहीं कि वास्तुदोष वाले घर में रहने वाले हर व्यक्ति को ये समस्याएँ होंगी।

वास्तविक अभिव्यक्ति तीन बातों पर निर्भर करती है—संपत्ति में क्या असंतुलित है, उससे कौन-सी तत्वगत या दोषगत स्थिति बनती है और ज्योतिषीय कुंडली के अनुसार परिवार का कौन-सा सदस्य उसके प्रति संवेदनशील है।

एक ही दिशा अलग-अलग प्रभाव क्यों दिखा सकती है

विचार कीजिए—संतुलित पृथ्वी तत्व स्थिरता देता है, लेकिन

भंडारण इसी सहारे को ठहराव में बदल सकता है। वहाँ कटाव या

अत्यधिक खुलापन पृथ्वी तत्व की कमी पैदा कर सकता है।

संपत्ति की प्रत्येक स्थिति तत्व को अलग तरह से प्रभावित करती है।

कटाव का अर्थ कमी है।

विस्तार का अर्थ अधिकता है। भारी भंडारण पृथ्वी तत्व और

कफ जैसी धारण करने की प्रवृत्ति बढ़ाता है।

जल तरलता बढ़ाता है, लेकिन जमा हुआ जल रुकाव का संकेत भी देता है।

अग्नि पित्त जैसी गर्मी बढ़ाती है।

विद्युत उपकरण सक्रियता और अग्नि जैसी उतेजना बढ़ाते हैं।

शौचालय या सेंटिक व्यवस्था जल के साथ अपशिष्ट और

निष्कासन की भूमिका भी जोड़ती है। गड्ढा नीचा या धँसा हुआ स्थान

बनाता है।

अत्यधिक ऊँचाई या भार धारण और समेटने की स्थिति को बदलता है।

इसलिए दक्षिण-पश्चिम के दो अलग वास्तुदोष स्वास्थ्य पर एक जैसा प्रभाव दिखाएँ, यह आवश्यक नहीं है।

दोष की अधिकता और कमी को समझना जरूरी है

यहाँ वात, पित्त और कफ की समझ इस लेख को अधिक उपयोगी बनाती है।

पारंपरिक दृष्टि से वात की अधिकता बेचैनी, अनियमितता,

भय, रूखापन या अत्यधिक गति के रूप में दिख सकती है।

वात की कमी या उसका अवरोध शारीरिक क्रियाओं की धीमी अथवा रुकी हुई गति के रूप में दिखाई दे सकता है।

पित्त की अधिकता गर्मी, जलन, उतेजना या अत्यधिक रूपांतरण के रूप में दिख सकती है। पित्त की कमी

कमजोर रूपांतरण या धीमे पाचन का संकेत दे सकती है।

कफ की अधिकता भारीपन, बलगम, सूजन, द्रव रुकने या संचय

के रूप में दिख सकती है। कफ की कमी का अर्थ अपर्याप्त स्थिरता,

पोषण या स्थिरता हो सकता है।

इसलिए किसी उपाय को अपनाने से पहले यह जानना जरूरी है कि स्थिति अधिकता, कमी या

अवरोध की है।

पाठक के लिए एक उदाहरण मान लीजिए, किसी निवासी को

पहले से ऐसी स्वास्थ्य समस्या है जिसका चिकित्सकीय निदान हो चुका है और जो अभी चर्चा किए गए

व्यापक समूह में आती है। "आपका दक्षिण-पश्चिम इसके लिए

जिम्मेदार है" कहने के बजाय मैं पहले समझना चाहूँगी कि शरीर किस प्रकार के लक्षण दिखा रहा है।

गर्मी या ठंडक? संचय या कमी?

अत्यधिक गति या अवरोध? रूखापन या द्रव का रुकना?

जलन या सूखे? इसके बाद मैं ज्योतिषीय कुंडली का अध्ययन करूँगी।

यदि कुंडली में उसी तत्व या दोषगत असंतुलन के प्रति संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो मैं दक्षिण-पश्चिम के सटीक सूक्ष्म क्षेत्र और उसके वर्तमान उपयोग का निरीक्षण करूँगी।

यदि शरीर, ज्योतिषीय कुंडली और संपत्ति—तीनों स्तरों पर एक जैसा तत्वगत संकेत मिलता है, तो उस संबंध पर ध्यान देना सार्थक हो

जाता है।

यदि ऐसा नहीं है, तो हमें जबरन वास्तु का कारण नहीं जोड़ना

चाहिए।

प्रक्रिया को दूसरी ओर से भी देखें

कुंडली में धन, वाणी, कुटुम्ब का भाव है द्वितीय भाव

मंगल: जन्म कुंडली के दूसरे भाव में यदि मंगल हो तो जातक तीखे चढ़े हुए नेत्र वाला, आँख कुछ रक्त युक्त लाल और कठोर वाणी तथा शीघ्र जवाब देने वाला होगा, मंगल के प्रभाव से जातक खर्चीले स्वभाव वाला दिखावा करने वाला होता है। पैतृक संपत्ति विवादित रहती है तथा कुटुंबी जनो से मतभेद रहता है।

बुध: यदि कुंडली के दूसरे भाव में बुध शुभ स्थिति में विराजमान हो तो जातक की वाणी मोह लेने वाली होती है ऐसा जातक संगीतकार होता है। ऐसे जातक के द्वारा कही गई बात प्रायः सच साबित हो जाती है। बुध व्यक्ति को सौम्य और संयमी बनाता है। जातक के कुटुंबी जनो से व्यवहार

मधुर होते हैं ऐसे जातक को कभी भी धन की कमी नहीं रहती। अपनी वाणी और तीव्र बुद्धि के बल पर ये धन अर्जित करते रहते हैं।

गुरु: जन्म कुंडली के दूसरे भाव में देव गुरु का होना अत्यंत शुभकारी माना जाता है ऐसा जातक अपनी वंश परंपरा को निभाने वाला पूर्व जन्म का कोई साथी था

तपस्वी, आध्यात्मिक, धार्मिक, संस्कारी तथा गंभीर वाणी वाला और सीमित बात करने वाला होता है।

दूसरे भाव का कारक ग्रह होने के कारण गुरु यहां शुभ फलप्रद होता है जातक में पहले से ही लोगों के बारे में जान लेने की शक्ति होती है। इनकी वाणी आशीर्वाद का काम करती है। इनको दिखने वाले सपने सच हो जाते हैं।

शुक्र: दूसरे भाव में शुक्र होने से जातक की आँख अत्यंत मनमोहक और वशीभूत करने वाली होती है

इनकी वाणी कोमल और ज्ञानपूर्ण होती है जैसे कि कोई अनुभवी व्यक्ति या ज्योतिषाचार्य ही बोल रहा हो।

गाने के शौकीन होते हैं तथा भोजन भी इन्हें राजसी पसंद होता है। लक्ष्मी जीवन जीने के शौकीन और विलासी होते हैं। धन प्राप्ति के लिए सौंदर्य प्रसाधन, गायन, कला, आभूषण इत्यादि से कमाते हैं।

कुटुम्ब से इनका व्यवहार स्वाथपूर्ण होता है।

शनि: दूसरे भाव में शनि होने से जातक की संपत्ति स्थिर अधिक होती है लेकिन धन संचय में मुश्किल होती ही जातक की वाणी में न्याय का भाव होता है सत्य वक्ता किंतु कटु भाषी होता है यहाँ कारण है कि लोग इन्हें गलत समझ लेते हैं। ये कुटुम्ब से दूर और पैतृक संपत्ति विवाद से प्राप्त होती है। धन प्राप्ति में अधिक मेहनत करनी होती है और लाभ देरी से प्राप्त होता है ऐसे जातक का विवाह काफी देरी से होते देखा गया है।

राहु: जन्म कुंडली में राहु दूसरे भाव में होने से जातक को अचानक धन लाभ करवाने वाला होता है जातक शेर, जूआ, सट्टा से धन कमाता है या झूठ बोलकर धन कमाता है हालाँकि धन संचय हो

पाना मुश्किल हो होता है। दूसरे भाव में राहु होने से जातक हकलाकर बोलने वाला और भ्रमिंत रहता है। परिवार के लोगों से कभी बनती है तो कभी बिगड़ती है। यहां बैठा राहु यदि खराब है तो जातक किसी बुरी लत का शिकार हो सकता है। जातक को धर्म के प्रति झुकाव अधिक रखना चाहिए।

केतु: जन्म कुंडली के दूसरे भाव में केतु धन आवक में उलार चढ़ाव देता है। लेकिन जातक के पास एक गुप्त विद्या भी होती है। यहां बैठा केतु अष्टम पर दृष्टि रखने से जातक को गुप्त रूप से खूब धन लाभ करवाता है। ऐसे लोगों की वाणी ही उनके लिए बुरा वक्त ले आती है लेकिन यदि ये अपनी वाणी से लोगों को मोटिवेट करें और आशीर्वाद दे हो केतु अच्छा प्रभाव देगा, दूसरे भाव का केतु

परिष्कार मामलों में भी असंतोष पैदा करता है।



Vedicodes
VASTU • NUMEROLOGY • ASTROLOGY

आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ

विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमरो वास्तु कंसल्टेंट

परिवहन विशेष News

अंक ज्योतिष भविष्यवाणी • 05 अक्टूबर 2026

दिन का अंक: 8 | महत्वाकांक्षा, अनुशासन, धन, जिम्मेदारी और उपलब्धि का दिन।

मूलांक 1 | दबाव नहीं, रणनीति के साथ नेतृत्व करें

आपका आत्मविश्वास किसी महत्वपूर्ण व्यावसायिक या वित्तीय विषय को आगे बढ़ाने में मदद करेगा। आज अनुशासित नेतृत्व और स्पष्ट प्राथमिकताएं लाभ देंगी। परिणाम को जबरदस्ती पाने की कोशिश न करें; शांत अधिकार, तैयारी और जिम्मेदार निर्णय अधिक मजबूत प्रगति देंगे।

मूलांक 2 | व्यावहारिक विषय संभालते समय संवेदनशीलता की रक्षा करें

आज दूसरों की अपेक्षाओं का दबाव अधिक महसूस हो सकता है। जहां उपयोगी हो सहयोग करें, लेकिन सीमाएं स्पष्ट रखें। धन, काम या जिम्मेदारी पर व्यावहारिक बातचीत भावनात्मक गलतफहमियों से बचा सकती है।

मूलांक 3 | पहचान को सार्थक परिणाम में बदलें

आपका संवाद और रचनात्मकता विशेषकर कार्यक्षेत्र में ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। विचार आत्मविश्वास से रखें, लेकिन उन्हें तथ्यों और निरंतर कार्य से मजबूत करें। आज पहचान तभी अधिक उपयोगी होगी जब उसके साथ वास्तविक मूल्य और प्रयास जुड़ा हो।

मूलांक 4 | अपने लक्ष्यों के पीछे की व्यवस्था मजबूत करें

आपका व्यवस्थित स्वभाव आज की महत्वाकांक्षी ऊर्जा के साथ अच्छा तालमेल बनाता है। व्यवस्थाओं, बजट, जिम्मेदारियों या दीर्घकालिक योजनाओं की समीक्षा करें और कमजोर हिस्सों को सुधारें। एक साथ सब पाने की कोशिश से बेहतर है धैर्यपूर्ण अनुशासन।

मूलांक 5 | प्रतिबद्धता से पहले अवसरों का मूल्यांकन करें

कोई नया संपर्क, प्रस्ताव या बदलाव आकर्षक लग सकता है, लेकिन आज उसके वित्तीय और दीर्घकालिक प्रभाव को समझना जरूरी है। लचीले रहें और विवरण जांचें। आज का समझदार निर्णय स्वतंत्रता और भविष्य की स्थिरता दोनों की रक्षा कर सकता है।

मूलांक 6 | रिश्तों और भौतिक जिम्मेदारियों में संतुलन रखें

परिवार और करीबी रिश्ते काम या धन की प्राथमिकताओं के साथ ध्यान मांग सकते हैं। भरोसेमंद सहयोग दें, लेकिन हर व्यक्ति का बोझ अपने ऊपर न लें। देखभाल, प्रतिबद्धताओं और व्यावहारिक योजना का परिष्कृत संतुलन सामंजस्य बढ़ाएगा।

मूलांक 7 | महत्वपूर्ण निर्णय में अंतर्दृष्टि का उपयोग करें

आपकी विश्लेषण क्षमता सतह के पीछे की वास्तविकता समझने में मदद करेगी। धन, करियर या निजी विषय पर दिशा चुनने से पहले अच्छी तरह शोध करें। शांत अवलोकन और पूरी जानकारी समय तथा ऊर्जा का सही निवेश करने में मदद करेगी।

मूलांक 8 | आज आपका स्वाभाविक अंक विशेष रूप से समर्थित है

आज का अंक आपकी महत्वाकांक्षा, अनुशासन, अधिकार और भौतिक जिम्मेदारी के साथ शक्तिशाली सामंजस्य बनाता है। करियर, धन और दीर्घकालिक लक्ष्यों पर केंद्रित ध्यान दें। शक्ति का नैतिक उपयोग करें, धैर्य रखें और निरंतर प्रयास को बोलने दें।

मूलांक 9 | मजबूत ऊर्जा को उपलब्धि की दिशा में

किसी कठिन जिम्मेदारी या महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने का दृढ़ संकल्प आपके पास है। मतभेद को शक्ति संघर्ष में बदलने से बचें। आत्मसंयम और उद्देश्यपूर्ण कार्य अधिक उपलब्धि देंगे और महत्वपूर्ण रिश्तों की भी रक्षा करेंगे।

कॉल / व्हाट्सएप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | [@vediccodes](https://t.me/vediccodes)

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●



साप्ताहिकी अंकशास्त्र



**डॉ. पूजाप्रसुन एन
गौहड मैडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
07303855446**

कुम्भ राशि राशिचक्र को ग्यारहवीं राशि है। इसका विस्तार 300° से 330° तक माना जाता है। कुम्भ के स्वामी शनिदेव हैं और इसका तत्व वायु तत्व है। कुम्भ एक स्थिर राशि है, अर्थात् इसमें किसी विचार, व्यवस्था, सिद्धांत या लक्ष्य को पकड़कर उसे लंबे समय तक बनाए रखने की शक्ति होती है। पारंपरिक राशि-वर्गीकरण में कुम्भ पुरुष राशि, स्थिर राशि, वायु राशि, शोर्षेदय राशि, दिनबली राशि तथा पश्चिम दिशा से संबंधित राशि मानी जाती है। बृहत्पाराशर होरा शास्त्र के राशि-वर्णन में कुम्भ को वायुतत्वयुक्त, द्विपद, दिन में बलवान, शोर्षेदय तथा शनिपुत्र अर्थात् सूर्यपुत्र शनि के अधिकार क्षेत्र से संबंधित बताया गया है।

कुम्भ को केवल आधुनिक ज्योतिष के “नवीन विचार”, “स्वतंत्रता” या “मानवतावाद” का सीमित करना इसके शास्त्रीय स्वरूप को बहुत छोट कर देता है। कुम्भ में वायु तत्व की विचार-शक्ति, स्थिर राशि की दृढ़ता और शनि की व्यवस्था, कर्म, अनुशासन, कर्म तथा सामाजिक संरचना की शक्ति एक साथ दिखाई देती है। इसलिए कुम्भ केवल नया विचार सोचने वाली राशि नहीं है। यह किसी विचार को सिद्धांत में बदलने, सिद्धांत को व्यवस्था में बदलने और व्यवस्था को लंबे समय तक चलाने की क्षमता का भी प्रतिनिधित्व करती है।

कुम्भ राशि का तत्व : वायु तत्व: कुम्भ राशि का तत्व वायु तत्व है। वायु तत्व विचार, गति, संचार, बुद्धि, आदान-प्रदान, संपर्क, नेटवर्क, मानसिक स्वतंत्रता और व्यापक दृष्टिकोण से संबंधित है। वायु दिखाई नहीं देती, लेकिन उसके प्रभाव को अनुभव किया जा सकता है। इसी प्रकार कुम्भ की सबसे बड़ी शक्ति कई बार किसी भौतिक वस्तु में नहीं बल्कि विचार, सिद्धांत, ज्ञान, व्यवस्था या सामाजिक दृष्टि में दिखाई देती है।

मिथुन और तुला भी वायु तत्व की राशियाँ हैं, लेकिन तीनों की वायु अलग प्रकार से कार्य करती है। मिथुन की वायु जानकारी और संचार की ओर जाती है। तुला की वायु संबंध, संतुलन और सामाजिक समन्वय की ओर जाती है। कुम्भ की वायु व्यापक व्यवस्था, सिद्धांत, समाज, समूह और भविष्य की दिशा में सोचने की क्षमता से जुड़ सकती है।

कुम्भ की वायु केवल विचार उत्पन्न नहीं करती। स्थिर राशि होने के कारण यह किसी विचार को पकड़कर उस पर लंबे समय तक काम कर सकती है। इसलिए कुम्भ में विचार और दृढ़ता का एक अनेकधा संयोजन दिखाई देता है।

कुम्भ का मूल प्रश्न हो सकता है : “मैं केवल अपने लिए क्या सोच रहा हूँ, बल्कि ऐसी कौन-सी व्यवस्था बना सकता हूँ जिससे बहुत से लोगों को लाभ हो?”

कुम्भ राशि : स्थिर राशि: कुम्भ में यह स्थिर राशि है। वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ चार स्थिर राशियाँ हैं। स्थिर राशियों का मूल स्वभाव किसी चीज को स्थिर करना, बनाए रखना, मजबूत करना और लंबे समय तक उसके साथ जुड़े रहना है।

चर राशि आरंभ करती है। द्विस्वभाव राशि परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदल सकती है। लेकिन स्थिर राशि किसी दिशा को पकड़ने के बाद उसमें दृढ़ता से बनी रहने की क्षमता रखती है। कुम्भ में यह स्थिरता वायु तत्व के साथ मिलती है। इसलिए यहां शरीर की स्थिरता से अधिक विचारों, सिद्धांतों और दृष्टिकोणों की स्थिरता महत्वपूर्ण हो सकती है। व्यक्ति किसी विचार को केवल इसलिए नहीं छोड़ता क्योंकि दूसरे लोग उससे सहमत नहीं हैं। यदि उसे अपने विचार में तर्क, सिद्धांत या उद्देश्य दिखाई देता है तो वह लंबे समय तक उसके साथ खड़ा रह सकता है।

यही कुम्भ की शक्ति भी है और उसकी चुनौती भी। दृढ़ता यदि विवेक के साथ हो तो सिद्धांत बनती है, लेकिन अत्यधिक हो जाए तो हठ या विचारों में जड़ता का रूप ले सकती है।

कुम्भ राशि : दिनबली: कुम्भ को पारंपरिक राशि-वर्गीकरण में दिनबली राशि माना जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि कुम्भ राशि वाला व्यक्ति केवल दिन में ही सफल होगा। यह राशि की शास्त्रीय बल-वर्गीकरण प्रणाली का हिस्सा है।

दिन का प्रतीक प्रकाश, दृश्यता, बाहरी गतिविधि और जाग्रत चेतना से जोड़ा जा सकता है। इसलिए प्रतीकात्मक स्तर पर कुम्भ की ऊर्जा विचारों को सामाजिक क्षेत्र में व्यक्त करने, किसी

व्यवस्था को सार्वजनिक रूप देने और व्यापक समाज के सामने अपने सिद्धांत रखने से जुड़ सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर कुम्भ जातक दिन में ही अधिक सक्रिय होगा। वास्तविक फल कुंडली में लग्न, चंद्रमा, सूर्य, ग्रहों की स्थिति और दशाओं के अनुसार बदलता है।

कुम्भ राशि : शोर्षेदय राशि: कुम्भ को शोर्षेदय राशि माना जाता है। शोर्षेदय का अर्थ है ऐसी राशि जिसका उदय सिर या मस्तक के भाग से होने वाला माना जाता है। पारंपरिक राशि-वर्णन में कुम्भ को शोर्षेदय बताया गया है। शोर्षेदय को केवल शाब्दिक रूप से समझना पर्याप्त नहीं है। प्रतीकात्मक रूप से इसका संबंध अग्रिम सोच, मानसिक दिशा, विचार की स्पष्टता और किसी विषय को पहले बुद्धि के स्तर पर समझने की प्रवृत्ति से जोड़ा जा सकता है।

शोर्षेदय को केवल शाब्दिक रूप से समझना पर्याप्त नहीं है। प्रतीकात्मक रूप से इसका संबंध अग्रिम सोच, मानसिक दिशा, विचार की स्पष्टता और किसी विषय को पहले बुद्धि के स्तर पर समझने की प्रवृत्ति से जोड़ा जा सकता है।

कुम्भ वायु तत्व की राशि है और शोर्षेदय भी है। इसलिए इसकी अभिव्यक्ति में मस्तक, विचार, सिद्धांत, ज्ञान, तर्क और भविष्य की दिशा का विशेष महत्व समझा जा सकता है।

लेकिन शोर्षेदय को यह निश्चित नियम नहीं मानना चाहिए कि कुम्भ लग्न वाला व्यक्ति निश्चित रूप से जल्दी सफलता प्राप्त करेगा या केवल बुद्धि से ही सफल होगा। उदय की यह संज्ञा राशि-वर्गीकरण का एक शास्त्रीय अंग है; फलादेश के लिए पूरी कुंडली आवश्यक है।

कुम्भ राशि : पश्चिम दिशा: बृहत्पाराशर होरा शास्त्र के राशि-वर्णन में कुम्भ को पश्चिम दिशा से जोड़ा जाता है। इसलिए कुम्भ की दिशात्मक संबंधा पश्चिम मानी जाती है।

यहां एक महत्वपूर्ण तकनीकी अंतर समझना आवश्यक है। “दिनबली” शब्द ग्रहों के लिए प्रयोग किया जाता है। सूर्य और मंगल को दशम भाव में, चंद्रमा और शुक्र को चतुर्थ भाव में, बुध और गुरु को लग्न में तथा शनि को सप्तम भाव में दिक्बल प्राप्त होने की शास्त्रीय व्यवस्था है। इसलिए कुम्भ को “दिक्बली राशि” कहना तकनीकी रूप से सही नहीं है।

कुम्भ की पश्चिम दिशा को राशि की पारंपरिक दिशात्मक पहचान के रूप में समझना चाहिए।

कुम्भ राशि का स्वामी : शनिदेव: कुम्भ और मकर दोनों राशियों के स्वामी शनिदेव हैं। लेकिन दोनों राशियों में शनि की अभिव्यक्ति अलग प्रकार से समझी जा सकती है। मकर में शनि कर्म, संरचना, प्रशासन, जिम्मेदारी और भौतिक निर्माण की दिशा में अधिक स्पष्ट रूप से कार्य करता है। कुम्भ में वही शनि सामाजिक व्यवस्था, समूह, सिद्धांत, व्यापक संयोजन, समानता, जनसमुदाय और सामूहिक संरचनाओं के स्तर पर व्यक्त हो सकता है।

शनि समय का ग्रह है। शनि कर्म का ग्रह है। शनि अनुशासन, श्रम, न्याय, उत्तरदायित्व, सीमाएं, व्यवस्था और कर्मफल का ग्रह है।

इसलिए कुम्भ का मूल स्वभाव केवल “स्वतंत्र विचार” नहीं है। इसके पीछे शनि का एक गहरा सिद्धांत है : “ऐसी व्यवस्था बनाओ जो व्यक्ति से बड़ी हो और समय की परीक्षा में टिक सके।”

कुम्भ राशि और शनि : व्यवस्था से समाज तक: मकर में व्यक्ति अपनी क्षमता से संरचना बना सकता है। कुम्भ उस संरचना को व्यापक सामाजिक स्तर तक ले जाने की दिशा में सोच सकता है।

इसीलिए कुम्भ की उच्च अभिव्यक्ति में संस्थाएं, संगठन, नेटवर्क, सामाजिक व्यवस्था, सामूहिक प्रयास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शोध, तकनीकी प्रणालियाँ और व्यापक सामाजिक हित के विचार दिखाई दे सकते हैं।

यहां शनि केवल व्यक्ति को अनुशासित नहीं करता। वह व्यक्ति को यह भी सिखाता है कि वह जिस व्यवस्था का हिस्सा है, उसके प्रति उसकी जिम्मेदारी क्या है।

कुम्भ का एक गहरा प्रश्न है : “मेरे बाद भी कौन-सी व्यवस्था चलती रहेगी?” कुम्भ राशि का प्रतीक : कुम्भ: कुम्भ का प्रतीक कुम्भ या जलपात्र है। एक व्यक्ति हाथ में पात्र लेकर जल धारण या वितरित करता हुआ दिखाई देता है।

यहां एक बहुत महत्वपूर्ण बात समझनी चाहिए। कुम्भ का प्रतीक जलपात्र है, लेकिन कुम्भ का तत्व जल नहीं बल्कि वायु है। इसलिए प्रतीक और तत्व को एक ही चीज नहीं समझना चाहिए। शास्त्रीय वर्गीकरण में कुम्भ वायु राशि है।

जलपात्र को प्रतीकात्मक रूप से ज्ञान, संसाधन, जीवनोपयोगी वस्तु या किसी ऐसी शक्ति का पात्र माना जा सकता है जिसे व्यक्ति अपने पास रोकने के बजाय दूसरों तक पहुंचाता है। इसीलिए कुम्भ का प्रतीक केवल पानी लेकर चलने वाले व्यक्ति का चित्र नहीं है। यह धारण करने और वितरण करने की अवधारणा भी औरत है।

“जो ज्ञान प्राप्ति काया है, उसे आगे प्रवाहित करो।”

यही कुम्भ के प्रतीक का एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ हो सकता है।

कुम्भ राशि और कालपुरुष: कालपुरुष के शरीर में कुम्भ का संबंध पिंडलियों और पैरों के निचले भाग से माना जाता है। कुछ परंपराओं में इसके साथ टखनों का भी संबंध बताया जाता है। पिंडलियों व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए आधार देती हैं। वे शरीर के भार को संभालती हैं और गाँव को संभव बनाती हैं। यह कुम्भ के प्रतीकात्मक स्वभाव से सुंदर रूप से जुड़ता है। कुम्भ केवल विचार करने की राशि नहीं है। उसका विचार अंततः किसी सामाजिक या सामूहिक दिशा में गति प्राप्त कर सकता है।

ज्योतिषीय स्वास्थ्य-विचार में यदि कुम्भ लग्न, चंद्र राशि या कुम्भ पर विशेष ग्रह प्रभाव हो तो संबंधित शारीरिक क्षेत्रों को पारंपरिक रूप से देखा जा सकता है। लेकिन इन संकेतों को आधुनिक चिकित्सकीय निदान नहीं माना जाना चाहिए।

कुम्भ राशि और एकादश भाव: कुम्भ राशिचक्र की ग्यारहवीं राशि है। वैदिक ज्योतिष में ग्यारहवां भाव लाभ, आय, इच्छापूर्ति, बड़े भाई-बहन, मित्रों, समूहों, नेटवर्क और सामाजिक संपर्कों से संबंधित माना जाता है।

कुम्भ राशि और एकादश भाव के बीच यह संख्या-संबंध प्रतीकात्मक रूप से महत्वपूर्ण है। हालांकि राशि और भाव को एक ही चीज नहीं मानना चाहिए। कुम्भ में एकादश भाव जैसे विषयों की प्रतिध्वनि दिखाई दे सकती है, विशेषकर समूह, नेटवर्क, सामाजिक संबंध, सामूहिक प्रयास और दीर्घकालीन लाभ के स्तर पर।

लेकिन वास्तविक कुंडली में एकादश भाव का फल उसके स्वामी, उसमें स्थित ग्रहों, दृष्टियों और दशाओं के अनुसार निर्धारित होगा।

कुम्भ राशि और लाभ: कुम्भ का लाभ कई बार व्यक्तिगत धन से आगे जाकर नेटवर्क, अवसर, संस्थागत सहयोग और सामाजिक संपर्कों के माध्यम से दिखाई दे सकता है।

यह राशि व्यक्ति को यह समझा सकती है कि एक व्यक्ति की क्षमता सीमित हो सकती है, लेकिन सही नेटवर्क और व्यवस्था के माध्यम से उसका प्रभाव बहुत व्यापक हो सकता है। इसलिए कुम्भ के लिए नेटवर्क केवल मित्रों का समूह नहीं है। यह ज्ञान, अवसर, संसाधन और सहयोग का तंत्र भी हो सकता है।

कुम्भ राशि और सामाजिक चेतना: कुम्भ की एक महत्वपूर्ण विशेषता सामाजिक चेतना है। लेकिन सामाजिक चेतना का अर्थ केवल सामाजिक मुद्दों पर बोलना नहीं है।

सच्ची सामाजिक चेतना यह समझना है कि किसी व्यवस्था का प्रभाव व्यक्ति से आगे जाकर समूह पर कैसे पड़ता है। कुम्भ व्यक्ति को यह प्रश्न पूछने की प्रेरणा दे सकता है :

“क्या यह व्यवस्था केवल मेरे लिए काम कर रही है या वास्तव में बहुत से लोगों के लिए न्यायपूर्ण और उपयोगी है?”

यही प्रश्न कुम्भ की शनि-प्रधान प्रकृति को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है।

कुम्भ राशि और स्वतंत्रता: कुम्भ स्वतंत्रता को महत्व देता है।

लेकिन शनि के कारण यह स्वतंत्रता केवल बंधन से मुक्ति नहीं होनी चाहिए। वास्तविक स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी होती है।

यदि व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता का उपयोग दूसरों को स्वतंत्र छिने के लिए करता है तो वह कुम्भ के उच्च सिद्धांत से दूर चला जाता है।

कुम्भ की परिपक्व स्वतंत्रता कहती है :

“मुझे सोचने की स्वतंत्रता चाहिए और मैं दूसरों की भी सोचने की स्वतंत्रता दूंगा।”

कुम्भ राशि और विज्ञान: वायु तत्व, शनि की संरचना और सामाजिक दृष्टि के कारण कुम्भ को विज्ञान, शोध, तकनीक, इंजीनियरिंग, नेटवर्क, डेटा, संचार और नवीन प्रणालियों से जोड़कर देखा जा सकता है। लेकिन किसी व्यक्ति का वैज्ञानिक या तकनीकी क्षेत्र में जाना केवल कुम्भ राशि से तय नहीं होता। पूरी कुंडली में बुध, मंगल, शनि, राहु, दशम भाव, दशमेश तथा संबंधित योगों को देखना आवश्यक है।

कुम्भ राशि और करियर: कुम्भ जातक के लिए ऐसे क्षेत्र अनुकूल हो सकते हैं जहां विचार, व्यवस्था, नेटवर्क, तकनीक, सामाजिक संगठन या दीर्घकालीन संरचना का उपयोग होता हो। विज्ञान, इंजीनियरिंग, तकनीक, सूचना प्रणाली, नेटवर्किंग, अनुसंधान, सामाजिक संस्थाएं, प्रशासन, नीति निर्माण, बड़े संगठन, गैर-लाभकारी संस्थाएं, मानवधिकार, सार्वजनिक

परियोजनाएं और बड़े पैमाने की व्यवस्थाओं से जुड़े क्षेत्र कुम्भ के स्वभाव से सामंजस्य रख सकते हैं।

लेकिन वास्तविक करियर निर्णय के लिए केवल सूर्य राशि या चंद्र राशि पर्याप्त नहीं होती। दशम भाव, दशमेश, लग्न, लग्नेश, शनि, बुध, गुरु और दशाओं का विश्लेषण आवश्यक है।

कुम्भ राशि और धन: कुम्भ में धन का संबंध कई बार लंबे समय के नेटवर्क, संस्थागत कार्य, तकनीकी प्रणाली, समूह आधारित व्यवसाय या सामाजिक प्रभाव से जुड़ सकता है।

कुम्भ व्यक्ति तत्काल लाभ के बजाय दीर्घकालीन लाभ को महत्व दे सकता है।

लेकिन शनि के कारण धन के मामले में धैर्य, अनुशासन और समय की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

अचानक लाभ की अपेक्षा स्थायी संरचना बनाना कुम्भ की शनि-प्रधान दृष्टि से अधिक अनुकूल हो सकता है।

लेकिन इन संकेतों को आधुनिक व्यवस्था की आलोचना करना

समूह से मानसिक दूरी अत्यधिक स्वतंत्रता की मांग अव्यवस्थित नवीनता

व्यवस्था की आलोचना करना लेकिन समाधान न देना

कुम्भ राशि और शनि की मूल त्रिकोण राशि: कुम्भ को शनि की मूल त्रिकोण राशि माना जाता है। इसलिए शनि के सिद्धांत कुम्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

मूल त्रिकोण का अर्थ यह नहीं है कि कुम्भ में शनि हर कुंडली में स्वतः शुभ फल देगा। ग्रह की स्थिति, भाव, दृष्टि, युति, नवांश और दशा के अनुसार फल बदलेंगे।

लेकिन राशि-स्वभाव के स्तर पर कुम्भ शनि के उन सिद्धांतों को मजबूत रूप से अभिव्यक्त करता है जिनमें व्यवस्था, अनुशासन, सामाजिक संरचना, दीर्घकालीन सोच और कर्मफल शामिल हैं।

कुम्भ राशि और सूर्य: सूर्य और शनि का संबंध वैदिक ज्योतिष में महत्वपूर्ण है। सूर्य आत्मा, सत्ता, अधिकार, प्रतिष्ठा और पिता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि शनि श्रम, जनसमुदाय, सीमित वर्ग और कर्मफल का आवरण है।

फिर भी कुम्भ की प्रकृति को समझें तो ऐसे विवाह में मित्रता, मानसिक समानता, स्वतंत्रता और परस्पर सम्मान महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

कुम्भ व्यक्ति को ऐसा साथी पसंद आ सकता है जो उसके विचारों का सम्मान करे और उसे व्यक्तिगत स्पेस दे। लेकिन यदि स्वतंत्रता भावनात्मक दूरी में बदल जाए तो संबंध में समस्या उत्पन्न हो सकती है।

कुम्भ राशि और आध्यात्मिकता: कुम्भ की आध्यात्मिकता कई बार परंपरागत धार्मिक रूप से अधिक विचारात्मक या दार्शनिक रूप में व्यक्त हो सकती है।

कुम्भ राशि और आध्यात्मिकता: कुम्भ की आध्यात्मिकता कई बार परंपरागत धार्मिक रूप से अधिक विचारात्मक या दार्शनिक रूप में व्यक्त हो सकती है।

कुम्भ में मंगल होने पर व्यक्ति को भावनात्मक प्रक्रिया अधिक बौद्धिक या वास्तविक हो सकती है। वह भावनाओं को समझने के लिए पहले उनका विश्लेषण कर सकता है। यह वैज्ञानिक और निष्पक्ष सोच दे सकता है, लेकिन कभी-कभी भावनात्मक दूरी भी पैदा कर सकता है।

मंगल ऊर्जा, खारस, संघर्ष, भूमि, तकनीकी शक्ति और कार्यवाही का ग्रह है।

कुम्भ में मंगल होने पर ऊर्जा सामाजिक परियोजनाओं, तकनीकी क्षेत्रों, संगठनात्मक कार्य या किसी बड़े उद्देश्य में लग सकती है।

लेकिन स्थिर राशि में मंगल होने पर विचारों पर उड़ने या संघर्ष को लंबा खींचने की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

कुम्भ राशि और बुध: बुध बुद्धि, तर्क, गणना, संचार और विश्लेषण का ग्रह है।

कुम्भ में बुध होने पर तार्किक, विश्लेषणात्मक, वैज्ञानिक और नेटवर्क आधारित सोच को बल मिल सकता है।

व्यक्ति बड़ी मात्रा में जानकारी को किसी व्यवस्था या सिद्धांत में बदलने की क्षमता रख सकता है।

कुम्भ राशि और गुरु: गुरु ज्ञान, धर्म, दर्शन, शिक्षा और वित्त का ग्रह है।

कुम्भ में गुरु होने पर ज्ञान को सामाजिक उपयोग से जोड़ने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

व्यक्ति शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मान सकता है।

लेकिन गुरु की वास्तविक स्थिति और फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करेगा।

कुम्भ राशि और शुक्र: शुक्र प्रेम, संबंध, कला, सौंदर्य, सुख और सामाजिक आकर्षण का ग्रह है।

जिद भावनात्मक दूरी अत्यधिक तर्कशीलता विद्रोह के लिए विद्रोह सामाजिक अलगाव अपने विचारों को ही अंतिम सत्य मानना समूह से मानसिक दूरी अत्यधिक स्वतंत्रता की मांग अव्यवस्थित नवीनता व्यवस्था की आलोचना करना लेकिन समाधान न देना कुम्भ राशि और शनि की मूल त्रिकोण राशि: कुम्भ को शनि की मूल त्रिकोण राशि माना जाता है। इसलिए शनि के सिद्धांत कुम्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

मूल त्रिकोण का अर्थ यह नहीं है कि कुम्भ में शनि हर कुंडली में स्वतः शुभ फल देगा। ग्रह की स्थिति, भाव, दृष्टि, युति, नवांश और दशा के अनुसार फल बदलेंगे।

लेकिन राशि-स्वभाव के स्तर पर कुम्भ शनि के उन सिद्धांतों को मजबूत रूप से अभिव्यक्त करता है जिनमें व्यवस्था, अनुशासन, सामाजिक संरचना, दीर्घकालीन सोच और कर्मफल शामिल हैं।

कुम्भ राशि और सूर्य: सूर्य और शनि का संबंध वैदिक ज्योतिष में महत्वपूर्ण है। सूर्य आत्मा, सत्ता, अधिकार, प्रतिष्ठा और पिता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि शनि श्रम, जनसमुदाय, सीमित वर्ग और कर्मफल का आवरण है।

फिर भी कुम्भ की प्रकृति को समझें तो ऐसे विवाह में मित्रता, मानसिक समानता, स्वतंत्रता और परस्पर सम्मान महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

कुम्भ व्यक्ति को ऐसा साथी पसंद आ सकता है जो उसके विचारों का सम्मान करे और उसे व्यक्तिगत स्पेस दे। लेकिन यदि स्वतंत्रता भावनात्मक दूरी में बदल जाए तो संबंध में समस्या उत्पन्न हो सकती है।

कुम्भ राशि और आध्यात्मिकता: कुम्भ की आध्यात्मिकता कई बार परंपरागत धार्मिक रूप से अधिक विचारात्मक या दार्शनिक रूप में व्यक्त हो सकती है।

कुम्भ में मंगल होने पर व्यक्ति को भावनात्मक प्रक्रिया अधिक बौद्धिक या वास्तविक हो सकती है। वह भावनाओं को समझने के लिए पहले उनका विश्लेषण कर सकता है। यह वैज्ञानिक और निष्पक्ष सोच दे सकता है, लेकिन कभी-कभी भावनात्मक दूरी भी पैदा कर सकता है।

मंगल ऊर्जा, खारस, संघर्ष, भूमि, तकनीकी शक्ति और कार्यवाही का ग्रह है।

कुम्भ में मंगल होने पर ऊर्जा सामाजिक परियोजनाओं, तकनीकी क्षेत्रों, संगठनात्मक कार्य या किसी बड़े उद्देश्य में लग सकती है।

लेकिन स्थिर राशि में मंगल होने पर विचारों पर उड़ने या संघर्ष को लंबा खींचने की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

कुम्भ राशि और बुध: बुध बुद्धि, तर्क, गणना, संचार और विश्लेषण का ग्रह है।

कुम्भ में बुध होने पर तार्किक, विश्लेषणात्मक, वैज्ञानिक और नेटवर्क आधारित सोच को बल मिल सकता है।

व्यक्ति बड़ी मात्रा में जानकारी को किसी व्यवस्था या सिद्धांत में बदलने की क्षमता रख सकता है।

कुम्भ राशि और गुरु: गुरु ज्ञान, धर्म, दर्शन, शिक्षा और वित्त का ग्रह है।

कुम्भ में गुरु होने पर ज्ञान को सामाजिक उपयोग से जोड़ने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

व्यक्ति शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मान सकता है।

लेकिन गुरु की वास्तविक स्थिति और फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करेगा।

कुम्भ राशि और शुक्र: शुक्र प्रेम, संबंध, कला, सौंदर्य, सुख और सामाजिक आकर्षण का ग्रह है।

जिद भावनात्मक दूरी अत्यधिक तर्कशीलता विद्रोह के लिए विद्रोह सामाजिक अलगाव अपने विचारों को ही अंतिम सत्य मानना समूह से मानसिक दूरी अत्यधिक स्वतंत्रता की मांग अव्यवस्थित नवीनता व्यवस्था की आलोचना करना लेकिन समाधान न देना कुम्भ राशि और शनि की मूल त्रिकोण राशि: कुम्भ को शनि की मूल त्रिकोण राशि माना जाता है। इसलिए शनि के सिद्धांत कुम्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

मूल त्रिकोण का अर्थ यह नहीं है कि कुम्भ में शनि हर कुंडली में स्वतः शुभ फल देगा। ग्रह की स्थिति, भाव, दृष्टि, युति, नवांश और दशा के अनुसार फल बदलेंगे।

लेकिन राशि-स्वभाव के स्तर पर कुम्भ शनि के उन सिद्धांतों को मजबूत रूप से अभिव्यक्त करता है जिनमें व्यवस्था, अनुशासन, सामाजिक संरचना, दीर्घकालीन सोच और कर्मफल शामिल हैं।

कुम्भ राशि और सूर्य: सूर्य और शनि का संबंध वैदिक ज्योतिष में महत्वपूर्ण है। सूर्य आत्मा, सत्ता, अधिकार, प्रतिष्ठा और पिता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि शनि श्रम, जनसमुदाय, सीमित वर्ग और कर्मफल का आवरण है।

फिर भी कुम्भ की प्रकृति को समझें तो ऐसे विवाह में मित्रता, मानसिक समानता, स्वतंत्रता और परस्पर सम्मान महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

कुम्भ व्यक्ति को ऐसा साथी पसंद आ सकता है जो उसके विचारों का सम्मान करे और उसे व्यक्तिगत स्पेस दे। लेकिन यदि स्वतंत्रता भावनात्मक दूरी में बदल जाए तो संबंध में समस्या उत्पन्न हो सकती है।

कुम्भ राशि और आध्यात्मिकता: कुम्भ की आध्यात्मिकता कई बार परंपरागत धार्मिक रूप से अधिक विचारात्मक या दार्शनिक रूप में व्यक्त हो सकती है।

कुम्भ में मंगल होने पर व्यक्ति को भावनात्मक प्रक्रिया अधिक बौद्धिक या वास्तविक हो सकती है। वह भावनाओं को समझने के लिए पहले उनका विश्लेषण कर सकता है। यह वैज्ञानिक और निष्पक्ष सोच दे सकता है, लेकिन कभी-कभी भावनात्मक दूरी भी पैदा कर सकता है।

मंगल ऊर्जा, खारस, संघर्ष, भूमि, तकनीकी शक्ति और कार्यवाही का ग्रह है।

कुम्भ में मंगल होने पर ऊर्जा सामाजिक परियोजनाओं, तकनीकी क्षेत्रों, संगठनात्मक कार्य या किसी बड़े उद्देश्य में लग सकती है।

लेकिन स्थिर राशि में मंगल होने पर विचारों पर उड़ने या संघर्ष को लंबा खींचने की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

कुम्भ राशि और बुध: बुध बुद्धि, तर्क, गणना, संचार और विश्लेषण का ग्रह है।

कुम्भ में बुध होने पर तार्किक, विश्लेषणात्मक, वैज्ञानिक और नेटवर्क आधारित सोच को बल मिल सकता है।

व्यक्ति बड़ी मात्रा में जानकारी को किसी व्यवस्था या सिद्धांत में बदलने की क्षमता रख सकता है।

कुम्भ राशि और गुरु: गुरु ज्ञान, धर्म, दर्शन, शिक्षा और वित्त का ग्रह है।

कुम्भ में गुरु होने पर ज्ञान को सामाजिक उपयोग से जोड़ने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

व्यक्ति शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मान सकता है।

लेकिन गुरु की वास्तविक स्थिति और फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करेगा।

कुम्भ राशि और शुक्र: शुक्र प्रेम, संबंध, कला, सौंदर्य, सुख और सामाजिक आकर्षण का ग्रह है।

जिद भावनात्मक दूरी अत्यधिक तर्कशीलता विद्रोह के लिए विद्रोह सामाजिक अलगाव अपने विचारों को ही अंतिम सत्य मानना समूह से मानसिक दूरी अत्यधिक स्वतंत्रता की मांग अव्यवस्थित नवीनता व्यवस्था की आलोचना करना लेकिन समाधान न देना कुम्भ राशि और शनि की मूल त्रिकोण राशि: कुम्भ को शनि की मूल त्रिकोण राशि माना जाता है। इसलिए शनि के सिद्धांत कुम्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

मूल त्रिकोण का अर्थ यह नहीं है कि कुम्भ में शनि हर कुंडली में स्वतः शुभ फल देगा। ग्रह की स्थिति, भाव, दृष्टि, युति, नवांश और दशा के अनुसार फल बदलेंगे।

लेकिन राशि-स्वभाव के स्तर पर कुम्भ शनि के उन सिद्धांतों को मजबूत रूप से अभिव्यक्त करता है जिनमें व्यवस्था, अनुशासन, सामाजिक संरचना, दीर्घकालीन सोच और कर्मफल शामिल हैं।

कुम्भ राशि और सूर्य: सूर्य और शनि का संबंध वैदिक ज्योतिष में मह

साइबर फ्रॉड से बचाव और सावधानी ही सबसे मजबूत सुरक्षा कवच

लेख डॉ हृदयेश कुमार, परिवहन विशेष समाचार पत्र

डिजिटल सुविधा बढ़ी तो ऑनलाइन ठगी के तरीके भी हुए जटिल — अंतर्राष्ट्रीय अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने नागरिकों से सतर्क रहने की अपील की

डॉ हृदयेश कुमार का मानना है कि आज बैंकिंग, खरीदारी, डिजिटल भुगतान, निवेश, सरकारी सेवाओं और आपसी संवाद का बड़ा हिस्सा ऑनलाइन माध्यम से संचालित हो रहा है।

डिजिटल तकनीक ने जहां जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं साइबर अपराधियों ने लोगों को ठगने के नए और जटिल तरीके भी विकसित किए हैं। फर्जी कॉल, नकली वेबसाइट और लिंक, ओटीपी की मांग, फर्जी कस्टमर केयर, डिजिटल गिरफ्तारी के नाम पर धमकी, ऑनलाइन निवेश और सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाली धोखाधड़ी इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

साइबर फ्रॉड से बचने के लिए केवल तकनीकी जानकारी पर्याप्त नहीं है। सतर्क रहना, जल्दबाजी में निर्णय नहीं लेना और

किसी अनजान व्यक्ति के साथ गोपनीय जानकारी साझा नहीं करना सबसे महत्वपूर्ण सुरक्षा उपाय हैं।

ऐसे समय पर अपने धैर्य से सोच और खुद के विवेक से संयम बरतें और ओटीपी और पासवर्ड साझा बिल्कुल भी नहीं करें

बैंकिंग पासवर्ड, UPI PIN, OTP, CVV अथवा कार्ड संबंधी गोपनीय जानकारी किसी के साथ साझा नहीं करनी चाहिए। किसी संस्था के नाम पर फोन करने वाला व्यक्ति यदि ऐसी जानकारी मांगे तो पहले उसकी पहचान और उद्देश्य की स्वतंत्र रूप से पुष्टि करें।

अनजान लिंक से सावधान रहें
SMS, WhatsApp, ई-मेल या सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त संदिग्ध लिंक पर क्लिक करने से बचें। किसी सेवा की वेबसाइट पर जाना हो तो उसका आधिकारिक पता स्वयं टाइप करना या आधिकारिक ऐप का इस्तेमाल करना अधिक सुरक्षित है।

खाते में किसी अनजान लेन-देन का संदेश मिलने पर तत्काल बैंक के आधिकारिक माध्यम से संपर्क करें। किसी अनजान व्यक्ति के कहने पर रकम वापस

भेजने की जल्दबाजी न करें।

फर्जी कस्टमर केयर से बचें
सर्व इंजन या सोशल मीडिया से मिले कस्टमर केयर नंबर पर बिना सत्यापन के भरोसा न करें। संबंधित बैंक, कंपनी या सेवा की आधिकारिक वेबसाइट या ऐप से संपर्क विवरण प्राप्त करें।

सोशल मीडिया पर सीमित जानकारी साझा करें

मोबाइल नंबर, पता, पहचान संबंधी दस्तावेज, बैंकिंग विवरण और अन्य निजी जानकारी को सार्वजनिक संघों पर साझा करने से बचना चाहिए।

अपनी डिजिटल सुरक्षा मजबूत रखें

मोबाइल और ऐप्स को समय-समय पर अपडेट करें। मजबूत पासवर्ड, स्क्रीन लॉक तथा उपलब्ध होने पर बहु-स्तरीय सुरक्षा का उपयोग करें।

अनजान व्यक्ति के कहने पर कोई ऐप डाउनलोड न करें।

किसी को मोबाइल की स्क्रीन शेयर या रिमोट एक्सेस न दें।

QR कोड देखकर यह न मानें कि उससे आपको पैसा प्राप्त होगा। भुगतान के लिए

विविध विशेष



QR कोड स्कैन करने पर आपके खाते से रकम जा सकती है।

“अभी भुगतान करें”, “खाता बंद हो जाएगा” या “कानूनी कार्रवाई होगी” जैसे दबाव वाले संदेशों में घबराकर निर्णय न लें।

ऑनलाइन नौकरी, निवेश, लॉटर या इनाम के आकर्षक प्रस्तावों पर बिना

सत्यापन के पैसा न लगाएं।

बैंक खाते, कार्ड, UPI PIN, CVV और OTP जैसी गोपनीय जानकारी किसी अनजान व्यक्ति को न दें।

ठगी हो जाए तो तुरंत कार्रवाई करें

साइबर वित्तीय धोखाधड़ी की स्थिति में समय पर कार्रवाई महत्वपूर्ण है। पीड़ित को तत्काल अपने बैंक या संबंधित भुगतान

सेवा प्रदाता को सूचना देनी चाहिए। भारत में साइबर अपराध की शिकायत के लिए 1930 हेल्पलाइन और आधिकारिक पोर्टल cybercrime.gov.in का उपयोग किया जा सकता है।

शिकायत करते समय लेन-देन संबंधी SMS, स्क्रीनशॉट, मोबाइल नंबर, चैट, ई-मेल, UPI ID, ट्रांजेक्शन विवरण तथा ई-

अन्य उपलब्ध डिजिटल साक्ष्यों को सुरक्षित रखना उपयोगी हो सकता है। साक्ष्यों को डिलीट या उसमें अनावश्यक बदलाव करने से बचना चाहिए।

डॉ हृदयेश कुमार के अनुसार, साइबर अपराध से बचाव केवल तकनीकी विशेषज्ञों की जिम्मेदारी नहीं है। प्रत्येक नागरिक को डिजिटल माध्यम का उपयोग करते समय सावधानी को अपनी आदत बनाना होगा। “डिजिटल सुविधा का उपयोग करें, लेकिन बिना सत्यापन के डिजिटल भरोसा न करें।”

आज थोड़ी-सी सावधानी भविष्य में होने वाले बड़े आर्थिक और व्यक्तिगत नुकसान से बचा सकती है।

साइबर सुरक्षा का मूल मंत्र “रुके — सोचें — सत्यापित करें — फिर कार्रवाई करें।”

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक भारतीय नागरिक को शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ जीवन जीने के लिए मूल रूप से जागरूक करना है आओ मिलकर एक नए राष्ट्र का निर्माण करें अच्छे विचारों के साथ अच्छे संकल्पों से समाज में नए भारत का भविष्य बनें।

परिवहन विशेष - क्रीड़ा एवं साहित्य - खेलों के महाकुंभ पर विशेष: तिरंगे की शान में भारत की पहचान...!

एशियाई खेलों में भारत की ऐतिहासिक जीत पर कवि की कलम से सेलामी

कवि: संजय एम. तराणेकर, इन्दौर - मध्य प्रदेश

संदर्भ: एशियाई खेलों में भारत की शानदार जीत

संपादकीय टिप्पणी और तथ्य:

तथ्य 1: इक्कीस स्वर्ण पदकों का नया इतिहास कवि ने लिखा है - रइक्कीस स्वर्ण पदकों ने भारत का मान बढ़ाया - एशियाई खेलों में यह भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन माना जा रहा है। यह केवल पदक नहीं, बल्कि युवा भारत की मेहनत, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और खेलो इंडिया जैसी योजनाओं का परिणाम है।

तथ्य 2: हॉकी में भारत 5 - 1 मलेशिया - राष्ट्रीय खेल का पुनर्जागरण दूसरा मुख्य बिंदु हॉकी का है। कविता में है - रहॉकी के मैदान में फिर गुंज उठा भारत का नाम, मलेशिया को 'हरा' खिलाड़ियों ने किया कमाल, पाँच-एक की शानदार जीत तिरंगे की है पहचान। र यह जीत बताती है कि भारतीय हॉकी फिर से विश्व स्तर पर अपना दबदबा कायम कर रही है।

तथ्य 3: कुश्ती अखाड़े से अमन की कहानी कवि ने लिखा - रयूं कभी कुश्ती के अखाड़े में दमखम दिखाते हैं... अमन की मेहनत ने भी दुनिया को दिखलाया। र यह अमन जैसे पहलवानों के संघर्ष की कहानी है, जो मिट्टी के अखाड़े से निकलकर अंतरराष्ट्रीय मेट तक भारत का परचम लहराते हैं।

मूल कविता:
> नीला आसमान में लहराया, तिरंगे का अभिमान,
> खेलों के इस महाकुंभ में, चमक रहा हिंदुस्तान,
> मेहनत की हर एक बूंद ने इतिहास नया रचाया,
> इक्कीस स्वर्ण पदकों ने, भारत का मान बढ़ाया।
> हॉकी के मैदान में फिर गुंज उठा भारत



का नाम,

> मलेशिया को 'हरा', खिलाड़ियों ने किया कमाल।

> पाँच-एक की शानदार जीत तिरंगे की है पहचान,

> हर गोल के साथ बढ़ते गया देश का स्वाभिमान।

> यूं कभी कुश्ती के अखाड़े में, दमखम दिखाते हैं,

> कभी हॉकी की रिटक से, प्रतिद्वंद्वी को हराते हैं।

> अमन की मेहनत ने भी ये दुनिया को दिखलाया,

> संघर्षों की राह पे चलकर, स्वर्णिम मुकाम पाया।

मुख्य बिंदु:
1. तिरंगा ही पहचान: जीत का असली

जश्न तब है जब तिरंगा सबसे ऊंचा लहरता है और राष्ट्रगान गूँजता है।

2. मेहनत का फल: कोई भी पदक एक दिन में नहीं आता - वर्षों की तपस्या, चोट, त्याग और अनुशासन का परिणाम है।

3. खेलों का महाकुंभ: एशियाई खेल केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि पूरे महाद्वीप की एकता, युवा शक्ति और सांस्कृतिक संगम है।

परिवहन विशेष की ओर से कवि संजय जी को साधुवाद और भारतीय खिलाड़ियों को जय हिंद!

प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला।

सह संपादक: पंकि कुंडू

जय हिन्द - वंदे मातरम् - भारत माता की जय

http://www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष - मनन-चिंतन खाली होने का साहस रखो - तभी तो भर पाओगे

भरे मन में ज्ञान नहीं ठहरता - शून्य ही सृजन की पहली शर्त है

सह संपादक: पंकि कुंडू

मूल कविता
खाली होने का साहस रखो—
तभी तो भर पाओगे।
भरे हुए गिलास में
और चाय डालो,
तो बाहर ही गिरती है।
हम भी कुछ ऐसे ही हैं।
दिमाग में पुरानी बातें,
पुराने गिले, पुरानी राय—
सब भरे पड़े हैं।
फिर शिकायत करते हैं
कि कुछ नया समझ नहीं पाते।
खाली होना हराना नहीं है।
जो पकड़ा है, उसे छोड़ो।
और छोड़ने में
पकड़ने से ज्यादा हिम्मत लगती है।
खाली होना देखकर
डर भी लगता है—
अब क्या बचेगा?
फिर बाँसुरी ुं देखता हूँ।
भीतर से खाली है,
इसीलिए सुर निकलता है।
भरी होती,
तो लकड़ी का एक टुकड़ा होती।
थोड़ी जगह बनाओ।
कुछ मान्यताएं छोड़ो,
कुछ लोगों को माफ करो,
कुछ पुराना कचरा हटाओ।

जगह होगी,
तभी तो कुछ नया आएगा।
संपादकीय विश्लेषण - तथ्य और मुख्य बिंदु:

1. तथ्य - मनोविज्ञान क्या कहता है:

यह कविता Cognitive Load Theory की बात करती है। जब दिमाग पुरानी बातों, गिले-शिकवों से भरा हो तो नई जानकारी के लिए जगह नहीं बचती। मनोवैज्ञानिक इसे 'Mental Clutter' कहते हैं। खाली होना अर्थात De-clutter।

2. तथ्य - दर्शन क्या कहता है:

- गीता में कहा - 'अपने को शून्य

कर, तभी पूर्णता आएगी।'
- जेन दर्शन में 'Shoshin -

Beginners Mind' - हर बार मन को खाली गिलास जैसा रखो।

- बाँसुरी का रूपक - भारतीय दर्शन का सार। कृष्ण की बाँसुरी भी भीतर से खाली है, तभी उसमें से ब्रह्मनाद निकलता है। भरी बाँसुरी लकड़ी मात्र है।

3. खाली होना हराना नहीं, हिम्मत है: हम पकड़ने को ताकत समझते हैं, पर छोड़ने में ज्यादा हिम्मत लगती है। पुरानी राय, अहंकार, 'मैं ही

सही हूँ' - इसे छोड़ना सबसे बड़ा साहस है। परिवहन विशेष के पाठकों के लिए - चाहे ड्राइवर हो या

अधिकारी, पुरानी आदतें छोड़ो, तभी नई सुरक्षा आएगी।

4. माफ़ी और सफाई: कवि



कहता है - कुछ मान्यताएं छोड़ो, कुछ लोगों को माफ करो, कुछ पुराना कचरा हटाओ। यह तीन-स्तरीय सफाई है -

विचार की, संबंध की, और आदत की। माफ करना दूसरे के लिए नहीं, अपने गिलास को खाली करने के लिए है।

5. परिवहन से जुड़ाव: सड़क पर भी यही नियम है - जो ट्रफ जामवाला है, उसमें नया माल नहीं भरा जा सकता। जो मन ओवरलोड है, उसमें नया ज्ञान नहीं। इसलिए हर सुबह मन

को भी PUC की तरह चेक करो।

निष्कर्ष - संपादकीय टिप्पणी:

आज की भागदौड़ में हम सब भरे हुए गिलास हैं। खबरें, नफरतें, बहसें - सब

भरी हैं। इसीलिए शांति छलक कर बाहर गिर जाती है। यह कविता हमें

याद दिलाती है - थोड़ी जगह बनाओ। खाली होना डर नहीं, अवसर है। खाली

बाँसुरी ही सुर देती है, भरी नहीं। आज एक पुरानी शिकायत को छोड़िए। कल के लिए जगह बनाइए।

गाँधी-शास्त्री जयंती एवं अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर गाँधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित

रिपोर्ट: प्रो. मनोज कैन, परिवहन विशेष नई दिल्ली

विवरण: गाँधी-शास्त्री जयंती एवं अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन में भव्य राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. के.पी. सिंह, निदेशक, गांधी भवन ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना, दीप प्रज्ज्वलन, दिल्ली विश्वविद्यालय कुलगीत एवं वंदे मातरम् के साथ हुआ। मुख्य अतिथि प्रो. अनिल राय, डीन इंटरनेशनल रिलेशंस, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा विशिष्ट अतिथि प्रो. रूपम कपूर, चेयरपर्सन गार्डन कमेटी एवं डीन फॉरेन स्टूडेंट्स रजिस्ट्री, दिल्ली विश्वविद्यालय रहे।

चित्र 1: दीप प्रज्ज्वलन - गांधी भवन में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए अतिथिगण - प्रो. अनिल राय, प्रो. के.पी. सिंह, प्रो. रूपम कपूर एवं अन्य गणमान्य।

चित्र 2: पुरस्कार वितरण - डॉ. मिलिंद पांडेय को राष्ट्रीय उभरते गांधीवादी विद्वान पुरस्कार 2026 तथा इंद्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वुमेन एवं माता सुंदरी कॉलेज फॉर वुमेन को सर्वश्रेष्ठ गांधी स्टडी सर्किल पुरस्कार 2026 प्रदान



किया गया।

चित्र 3: श्रोताओं के रूप में अतिथिगण - कार्यक्रम में शांतिपूर्वक व्याख्यान सुनते हुए

पुरस्कार एवं प्रतियोगिता विवरण:

चरखा स्पिनिंग प्रतियोगिता- 2026 में रूपा देवी को प्रथम, ज्योति और विकास को द्वितीय, नमनीत कुमार एवं वंदना कुमारी को तृतीय पुरस्कार। सर्तिफिकेट

कोर्स के वैभव, शिव नारायण, प्रीति, बलबीर सिंह रावत एवं अर्जुन को प्रमाण-पत्र।

स्वास्थ्य शिविर एवं हैडलूम प्रदर्शनी के सहयोग से

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में 300 से अधिक लोगों ने लाभ

लिया। पौड़ी गढ़वाल की महिला

कारिगरों द्वारा निर्मित श्री तिमली

हैडलूम की स्टॉल प्रदर्शनी लगी, जिसमें स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान

और डॉ. विनय गुप्ता, उप-

निदेशक गांधी भवन के धन्यवाद

ज्ञापन के साथ हुआ।

संपादकीय मंडल - प्रधान

संपादक: संजय कुमार बाठला -

Editor-in-Chief: Sanjay Kumar Bathla - सह

संपादक: पंकि कुंडू - Co-

Editor: Pinki Kundu

http://www.newspari

vahan.com

दुनियाँ की थाली पर मंडराया महंगाई और खाद्य संकट का महातूफान!

त्योहारों से पहले चीनी की जमाखोरी पर केंद्र का कड़ा शिकंजा, क्या 2027 में भोजन बन जाएगा आम आदमी की सबसे बड़ी आर्थिक चुनौती?

विदेश मंत्री की बड़ी चेतावनी - भारत कितना सुरक्षित?

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास

भावनानी - गोंदिया, महाराष्ट्र

रिपोर्ट प्रस्तुति: परिवहन विशेष ब्यूरो

संपादकीय विश्लेषण - समग्र व्यापक तथ्य:

तथ्य 1: चीनी पर केंद्र का सख्त प्रहार - 15 अक्टूबर से नए नियम

भारत सरकार के उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने 1 अक्टूबर 2026 को संशोधित स्टॉक व्यवस्था घोषित की। 115 अक्टूबर से 30 नवंबर 2026 तक व्यापारियों के लिए स्टॉक रखने की अधिकतम अवधि 15 दिन होगी।

- सामान्य क्षेत्रों में सीमा: 1000 क्विंटल
- कोलकाता महानगरीय क्षेत्र और असम के लिए: 2000 क्विंटल

यह आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 के तहत बाजार नियामक शक्ति का उपयोग है। इससे पहले 1 सितंबर को सीमा 4000 से घटाकर 2000 की गई थी, अब और सख्त। सरकारी आंकड़ों के अनुसार अगस्त की तुलना में चीनी खुदरा

कीमत 15% और एक्स-मिल कीमत 28% कम हुई है। यह उपभोक्ता हित की सीधी रक्षा है।

तथ्य 2: विदेश मंत्री की न्यूयॉर्क चेतावनी - 29 सितंबर 2026 एशिया सोसाइटी कार्यक्रम, न्यूयॉर्क में विदेश मंत्री ने कहा - युद्धों का प्रभाव केवल सीमा तक नहीं रहता। रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया संघर्ष से खाद्यान्न, उर्वरक, ऊर्जा और वैश्विक दक्षिण की आर्थिक स्थिरता पर गंभीर दबाव है। काला सागर में गेहूं-मक्का आपूर्ति बाधित, होमुंज जलडमरूमध्य में ऊर्जा और उर्वरक जोखिम। खाद्य संकट केवल कमी से नहीं, बल्कि उर्वरक न मिलना, परिवहन महंगा होना और व्यापार मार्ग बाधित होने से भी पैदा होता है।

तथ्य 3: एल नीनो का महाखतरा - 2027 तक 27.4 करोड़ लोग खतरे में संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP) ने 5 अगस्त 2026 को चेतावनी दी कि 2026-27 का एल नीनो विनाशकारी हो सकता है। 145 खाद्य-असुरक्षित देशों में 2027 के अंत तक 27.4 करोड़ लोग तीव्र खाद्य असुरक्षा का सामना कर सकते हैं - यह वर्तमान अनुमान से 4.9 करोड़ अधिक है। यह

प्रशांत महासागर के तापमान बदलाव से सूखा, बाढ़ और फसल नुकसान का कारण बनेगा। नोट: यह भारत का आंकड़ा नहीं, वैश्विक संवेदनशील देशों का है।

तथ्य 4: भारत पर कितना असर ? महंगाई के संकेत

सांख्यिकी मंत्रालय के 14 सितंबर 2026 के आंकड़े:

- अगस्त 2026 में खाद्य महंगाई: 5.95%
- जुलाई 2026 में थी: 5.52%
- सामान्य खुदरा महंगाई: 4.82%

यह देशव्यापी संकट का प्रमाण नहीं, पर दबाव का संकेत है। भारत के पास सुरक्षा कवच हैं - विशाल उत्पादन क्षमता, FCI भंडारण, MSP व्यवस्था और PDS प्रणाली। इसलिए भारत में भौतिक कमी की संभावना कम, पर उर्वरक, डीजल, परिवहन लागत और आयातित खाद्य तेलों से थाली महंगी हो सकती है।

मुख्य बिंदु - 2027 में थाली का भविष्य:

1. महंगाई एक वस्तु से नहीं, कई लागतों के एक साथ बढ़ने से आएगी - गेहूं, चावल, दाल, तेल, दूध सब अलग-अलग कारणों से प्रभावित।
2. ट्रांसपोर्ट सेक्टर सबसे महत्वपूर्ण

कड़ी - डीजल महंगा, टोल महंगा तो सब्जी-अनाज का भाड़ा बढ़ेगा, सीधा असर थाली पर।

3. समाधान: सरकार को स्टॉक निगरानी के साथ उर्वरक उपलब्धता, खाद्यान्न भंडार, आयात-निर्यात नीति और PDS को मजबूत करना होगा। राज्यों को जमाखोरी पर कड़ी निगरानी।

निष्कर्ष - एडवोकेट भावनानी जी की टिप्पणी जो हमारा संपादकीय मत भी है: >विकसित भारत @2047 की दिशा में खाद्य सुरक्षा, जमाखोरी पर कड़े शिकंजे को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना समय की मांग है, क्योंकि भूख और महंगाई से सुरक्षित नागरिक ही मजबूत अर्थव्यवस्था तथा स्थिर राष्ट्र का वास्तविक नींव होते हैं। आज की अर्थव्यवस्था का मूल्यांकन केवल GDP, विदेशी मुद्रा भंडार या शेयर बाजार से नहीं, बल्कि इस बात से होना चाहिए कि आम नागरिक की थाली कितनी सुरक्षित, सुलभ और किफायती है।

प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला - सह संपादक: पिंकी कुंडू

प्रकाशक: परिवहन विशेष, नई दिल्ली

<http://www.newsparivahan.com>

परिवहन विशेष

Transport Special National Newspaper

Date: 05 October 2026
RNI DEL/14/2023/66499
www.newsparivahan.com

दुनियाँ की थाली पर मंडराया महंगाई और खाद्य संकट का महातूफान!

त्योहारों से पहले चीनी की जमाखोरी पर केंद्र का कड़ा शिकंजा - क्या 2027 में भोजन बनेगा सबसे बड़ी आर्थिक चुनौती?

चीनी स्टॉक सीमा

- सामान्य: 1000 क्विंटल
- कोलकाता/असम: 2000 क्विंटल
- लागू: 15 अक्टूबर - 30 नवंबर 2026

खाद्य महंगाई

5.95% (अगस्त 2026)

संयुक्त राष्ट्र की अनुमान

WFP चेतावनी

27.4 करोड़ लोग खतरे में 2027 तक

संभावित खाद्य अहुरक्षा

मुख्य चिंताएँ:

- त्योहारों के मौसम में आपूर्ति बाधित
- जलवायु बदलाव से फसल उत्पादन में गिरावट
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर युद्ध का प्रभाव

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी - गोंदिया, महाराष्ट्र

विशेष विश्लेषण | नीति-सुझाव: स्टॉक निगरानी, आयात नीति, सार्वजनिक वितरण मजबूत करें

Editor in Chief: Sanjay Kumar Bathla | Co-Editor: Pinki Kundu

संत परमानंद हॉस्पिटल का Walkathon 2.0 - हर कदम दिल और गतिशीलता के नाम

Walkathon 2.0 | All for Hearts and Mobility - 2000+ प्रतिभागियों ने दिल और गतिशीलता के लिए आयोजित 3 किमी पदयात्रा में लिया उत्साहपूर्वक हिस्सा। 04 अक्टूबर 2026,

कश्मीरी गेट में स्वास्थ्य जागरूकता के लिए उठाए गए 2000 कदम रिपोर्ट नवदीप सिंह परिवहन विशेष समाचार पत्र

कश्मीरी गेट, 4 अक्टूबर 2026: संत परमानंद अस्पताल, कश्मीरी गेट द्वारा 'Walkathon 2.0 - All For Hearts and Mobility' का आयोजन रविवार, 4 अक्टूबर 2026 को सुबह 6:45 बजे से 9:00 बजे तक बड़े उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस आयोजन का उद्देश्य दिल की सेहत, स्वास्थ्य जीवनशैली तथा शारीरिक गतिविधि व गतिशीलता के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। इस पदयात्रा में लगभग 2000 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसमें युवा, स्कूली छात्र-छात्राएं, वरिष्ठ नागरिक, डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिकल

स्टाफ के साथ-साथ स्काउट, गाइड, रोवर्स और रेंजर्स भी शामिल हुए। पदयात्रा को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री तथा भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री हर्ष मल्होत्रा एवं लक्ष्मी नगर के विधायक श्री अभय वर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। दोनों ने कहा कि नियमित चलना और शारीरिक सक्रियता हृदय रोगों को रोकने का सबसे सरल उपाय है।

मार्ग और आयोजन विवरण:

पदयात्रा का मार्ग: संत परमानंद अस्पताल, कश्मीरी गेट → गांधी स्मृति → दर्शन स्मृति → राजघाट, कुल दूरी लगभग 3 किमी। यह मार्ग ऐतिहासिक स्थलों से होकर गुजरता हुआ प्रतिभागियों को राष्ट्रीय धरोहर से जोड़ने का भी प्रयास रहा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित रहे: श्री अवतार सिंह, श्री ओंकार पुरी, श्री नवदीप सिंह, श्री

इंदरजीत सिंह, श्री फीरोज खान, श्री अभिषेक शर्मा, श्री के पी सिंह, श्री मुकेश मंडल, श्री वकील अहमद एवं बिमलेश, साथ ही अस्पताल के वरिष्ठ प्रबंधन व स्टाफ। सभी ने एक साथ चलकर स्वास्थ्य का संदेश दिया।

फोटो 1: Walkathon 2.0 के दौरान प्रतिभागी 'ALL FOR HEARTS & MOBILITY' सेल्फी पॉइंट पर, उत्साह के साथ हिस्सा लेते हुए - Every Step Matters

फोटो 2: संत परमानंद अस्पताल के अधिकारी एवं स्टाफ, स्काउट-गाइड के साथ Walkathon 2.0 में एकजुट

फोटो 3: समापन समारोह में प्रतिभागियों को मेडल व प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए - सभी को मेडल, प्रमाण पत्र एवं 50% डायगनोस्टिक्स छूट कूपन प्रदान किए गए

स्वास्थ्य संदेश / Health Tips:

- Walk daily - रोज तहलें
- Check BP - रक्तचाप नियमित जांचें
- Control sugar - शुगर को नियंत्रण में रखें
- Manage stress - तनाव को प्रबंधित करें
- Sleep well - 7-8 घंटे की नींद लें
- Keep moving - गतिशील

बने रहे

- Build strength - शक्ति बढ़ाएं
- Maintain weight - संतुलित वजन रखें
- Improve balance - संतुलन सुधारें
- Stretch regularly - नियमित स्ट्रेचिंग करें

लाभ व सुविधाएँ: सभी प्रतिभागियों को Walkathon 2.0 थीम टी-शर्ट व कैप, कॉन्स मेडल व प्रमाण पत्र, जलपान व स्वास्थ्य किट, 50% परामर्श छूट कूपन, नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श उपलब्ध।

संपादक प्रभारी: संजय कुमार बाठला (Editor-in-Chief) - सह-संपादक: पिंकी कुंडू (Co-Editor)

<http://www.newsparivahan.com>

असंतुलित जीवनशैली व फास्ट फूड से बढ़ रही बीमारियां, खाद्य सुरक्षा विभाग की मौन कार्यप्रणाली पर उठे सवाल।

रिपोर्ट हरिओम बाजपेई,परिवहन विशेष, पीलीभीत

आज आधुनिक दौर में प्राकृतिक आहार से दूरी और बाजार में बिकने वाली अस्वास्थ्यकर खान पान के बढ़ते चलन ने जनस्वास्थ्य के सामने गंभीर संकट खड़ा कर दिया है आज क्षेत्र में सात्विक जीवन शैली के अभाव और खुलेआम बिक रहे तले-धुने व डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों के कारण लोग कम उम्र में ही गंभीर बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। इस स्थिति के बीच खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन की सुस्ती और नियमित जांच के अभाव को लेकर स्थानीय नागरिकों व स्वास्थ्य विशेषज्ञों में भारी रोष है।

स्वास्थ्य एवं जीवनशैली विशेषज्ञ संजीव सक्सेना के अनुसार, पिछले तीन दशकों में खान-पान की आदतों में आए बदलावों ने मानव शरीर को बीमारियों का घर बना दिया है। पहले जहां सात्विक व संतुलित आहार, ताजी हरी सब्जियां और अंकुरित अन्न जनजीवन का मुख्य हिस्सा हुआ करते थे, वहीं आज पैकेटबंद नाश्ते, मोमोज, खस्ते, भटूरे, रिफाईंड तेल, अत्यधिक नमक और चीनी का अनियंत्रित उपयोग बढ़ गया है। प्राचीन काल में जहां प्राकृतिक आहार और कंदमूल-फल के सेवन से लोग दीर्घायु होते थे, वहीं आज की पीढ़ी

पुरी तरह से दवाओं और चिकित्सीय जांचों पर निर्भर होकर रह गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि निरोगी जीवन के लिए संतुलित भोजन और प्राकृतिक जीवनशैली की ओर लौटना अत्यंत आवश्यक है। नगर व ग्रामीण अंचलों में शाम ढलते ही चाट, पकौड़ी और फास्ट

फूड के ठेलों व दुकानों पर बच्चों और युवाओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। इन दुकानों पर बार-बार गर्म किए जाने वाले घटिया तेल, दूधित पानी, मिलावटी मसालों और खुले में रखी सामग्रियों का प्रयोग धड़ल्ले से किया जा रहा है, जो मानव शरीर के लिए 'धोमे जहर' का काम कर

रहा है स्थानीय निवासियों का आरोप है कि इस गंभीर स्थिति के बावजूद खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन पूरी तरह मौन बैठा है। विभाग द्वारा नियमित रूप से ठेलों और दुकानों की स्वच्छता व गुणवत्ता की जांच नहीं की जाती, जिससे मिलावटी और हानिकारक खाद्य पदार्थों का कोराबरा बेखौफ फल-फूल रहा है।

क्षेत्रीय प्रबुद्ध वर्ग और स्वास्थ्य प्रेमियों का मानना है कि इस स्थिति से निपटने के लिए प्रशासनिक सख्ती और सामाजिक जागरूकता दोनों स्तरों पर ठोस कदम उठाने होंगे। खाद्य सुरक्षा विभाग त्योहारों के समय की जाने वाली खानापूर्ति से आगे बढ़कर बाजारों में नियमित छापेमारी अभियान चलाए। दूधित तेल, कृत्रिम रंगों और मिलावटी सामग्री का उपयोग करने वाले विक्रेताओं पर कड़े कानूनी प्रावधानों के तहत कार्रवाई की जाए।

अभिभावक स्वयं पहल करते हुए बच्चों में घर के बने पोषिक भोजन और प्राकृतिक आहार की आदत डालें, ताकि नई पीढ़ी को फास्ट फूड के आकर्षण और उससे उत्पन्न होने वाले स्वास्थ्यगत खतरों से बचाया जा सके।

प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाने और खाद्य सुरक्षा विभाग की जावाबदेही तय करने से ही क्षेत्र में फैल रही बीमारियों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सकता है।

निरल पुर्ती की अध्यक्षता में विभागीय पदाधिकारियों की समीक्षा बैठक

रिपोर्ट डॉ दीपक कुमार घोष, परिवहन विशेष खूंटी

झारखण्ड विधान सभा की सरकारी उपक्रमों संबंधी समिति का आज खूंटी जिला आगमन हुआ। इस दौरान उपायुक्त मो० जावेद हुसैन एवं पुलिस अधीक्षक ऋषभ गर्ग ने पौधा भेंट कर समिति के सभापति निरल पुर्ती एवं अन्य सदस्यों का जिले में स्वागत किया।

इसके पश्चात परिषदन, खूंटी के सभापति में झारखण्ड विधान सभा की सरकारी उपक्रमों संबंधी समिति के सभापति श्री पूर्ती की अध्यक्षता में

पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन शाखा सारनाथ का वार्षिक अधिवेशन में सेवानिवृत्त रेलकर्मियों की समस्याओं के समाधान और पेंशनर्स हितों पर हुआ मंथन

सेवानिवृत्त रेलकर्मियों के हितों पर मंथन, पेंशन व स्वास्थ्य सुविधाओं के सरलीकरण की उठी मांग

रिपोर्ट संतोष कुमार सिंह, परिवहन विशेष समाचार पत्र वाराणसी

पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन, शाखा सारनाथ का वार्षिक अधिवेशन रविवार को रेलत अर्बन डन, सारनाथ में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि भारत पेंशनर्स समाज के कार्यकारी अध्यक्ष अभिष रमण ने दीप प्रज्वलित कर किया। अधिवेशन में पूर्वोत्तर रेलवे के सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों एवं पेंशनभोगियों से जुड़े विभिन्न हितपूर्वक विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसमें पेंशन संबंधी समस्याओं के निवारण, स्वास्थ्य सेवाओं

विभागीय पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से उप विकास आयुक्त, वन प्रमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी, गोपनीय शाखा समेत

विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, कार्यालयक अभियंता एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में संबंधित विभागों एवं उपक्रमों के व्यापारिक एवं वाणिज्यिक दृष्टिकोण से किए जा रहे कार्यों एवं

(REHS/Medical Card) के सरलीकरण, पेंशनभोगियों के कल्याणकारी गुंथें तथा एसोसिएशन के संगठनिक विषयों को प्रमुखता से उठाया गया। कार्यक्रम के दौरान एसोसिएशन द्वारा विगत वर्ष में किए गए कार्यों एवं गतिविधियों की समीक्षा की गई। साथ ही आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत कर उस पर विचार-विमर्श

किया गया तथा आगामी वर्ष के लिए संगठन की कार्ययोजना एवं पेंशनभोगियों के हित में किए जाने वाले प्रयासों पर भी चर्चा हुई। अधिवेशन में एसोसिएशन के प्रांतीय एवं स्थानीय पदाधिकारियों के अलावा बड़ी संख्या में सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों एवं पेंशन भोगियों ने सहभागिता की। वक्तव्यों ने कहा कि सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों की

गतिविधियों की समीक्षा की गई। बैठक के दौरान खनन विभाग की समीक्षा करते हुए जिले के खनन क्षेत्रों, बालू घाटों एवं इनके संचालन से संबंधित जानकारी ली गई। कृषि एवं आत्मा विभाग की समीक्षा के क्रम में बीज वितरण तथा किसानों को विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं लाभों का लाभ दिए जाने से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई एवं आवश्यक निर्देश दिए गए।

विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान राज्य सरकार द्वारा उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराई जा रही 200 यूनिट नि:शुल्क बिजली की व्यवस्था की जानकारी ली गई।

समस्याओं के समाधान तथा उन्हें बेहतर स्वास्थ्य एवं पेंशन सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए संगठन लगातार प्रयासरत है। इस अवसर पर मुख्यस्थ एवं मेहंते से आर मुन्नी लाल, गानू प्रकाश, दीपक श्रीवास्तव, अरिस्त कुमार मुखर्जी, अशोक कुमार पांडेय, राम निवास, राजीव जायसवाल एवं अशोक कुमार श्रीवास्तव सहित शाखा के पदाधिकारी एवं सम्मानित सेवानिवृत्त रेलकर्मियों मौजूद रहे।

अधिवेशन का सफल संचालन फीरोज ने किया। अंत में पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन, शाखा सारनाथ के अध्यक्ष रामेश्वर प्रसाद ने मुख्यस्थ एवं मेहंते से आर पदाधिकारियों तथा उपस्थित सभी सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

लाइक्स, फॉलोअर्स और बदलती युवा पीढ़ी



डॉ. विजय गर्ग

एक और महत्वपूर्ण बात फॉलोअर्स और वास्तविक रिश्तों के बीच अंतर से जुड़ी है। किसी व्यक्ति के हजारों फॉलोअर्स हो सकते हैं, लेकिन उसे वास्तव में समझने और सहयोग देने वाले लोग बहुत कम हो सकते हैं। इसके विपरीत, किसी व्यक्ति की ऑनलाइन उपस्थिति बहुत छोटी हो सकती है, लेकिन उसके पारिवारिक संबंध और गहरी मित्रताएं बहुत मजबूत हो सकती हैं।

किसी समाज को केवल इसलिए विकसित नहीं कहा जा सकता कि वहां आधुनिक इमारतें, तेज सड़के, उन्नत तकनीक और सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन उपलब्ध है। किसी समाज की वास्तविक प्रगति इस बात से दिखाई देती है कि वह अपने बुजुर्गों के साथ कैसा व्यवहार करता है, विशेषकर उन माता-पिता के साथ, जिन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य वर्ष अगली पीढ़ी को पालने और संवारने में लगा दिए।

आज समाज में वृद्धाश्रमों की संख्या और आवश्यकता दोनों बढ़ती दिखाई दे रही हैं। अनेक वृद्धाश्रम बुजुर्गों को रहने की जगह, भोजन, सुरक्षा, चिकित्सा सहायता और साथ-जैसी सुविधाएं प्रदान करते हैं। जिन बुजुर्गों का कोई पारिवारिक सहारा नहीं है या जिनके बच्चे किसी अपरिहार्य परिस्थिति के कारण उनकी देखभाल नहीं कर सकते, उनके लिए ऐसी संस्थाएं महत्वपूर्ण सामाजिक सेवाएं हो सकती हैं।

लेकिन हमें एक असहज प्रश्न भी पूछना चाहिए—इन्हें माता-पिता ऐसी स्थिति तक क्यों पहुंच रहे हैं, जहां उन्हें अपने ही घर में अपने लिए जगह नहीं दिखाई देती?

यह समस्या केवल वृद्धाश्रमों की नहीं है। यह बदलते पारिवारिक संबंधों, घटती भावनात्मक निकटता और पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी की समस्या है।

घर बनाने वाले माता-पिता हर परिवार की अपनी एक कहानी होती है और अनेक सुखी घरों के पीछे माता-पिता का त्याग छिपा होता है। उन्होंने मेहनत की, धन बचाया, बच्चों को पढ़ाया, कठिनाइयों का सामना किया और अक्सर अपने सपनों को इसलिए टाल दिया ताकि उनके बच्चों को बेहतर अवसर मिल सकें।

एक मां ने अपने जीवन के कई दशक परिवार को देखभाल में लगा दिए, बिना किसी बदले की अपेक्षा के। एक पिता ने बच्चों की फीस भरने, घर बनाने और उनका भविष्य सुरक्षित करने के लिए वर्षों तक मेहनत की।

आज जिस दुनिया में युवा पीढ़ी बड़ी हो रही है, वह पिछली पीढ़ियों की दुनिया से बहुत अलग है। मोबाइल फोन अब केवल संचार का साधन नहीं रहा। करोड़ों युवाओं के लिए यह कक्षा, मनोरंजन केंद्र, समाचार स्रोत, सामाजिक मंच, रचनात्मक स्टूडियो और कभी-कभी सामाजिक पहचान को मापने का साधन भी बन गया है।

इस डिजिटल संस्कृति के केंद्र में लाइक्स, फॉलोअर्स, टिप्पणियां और शेयर हैं। ये साधारण से दिखाई देने वाले आंकड़े भले ही हानिरहित लगें, लेकिन धीरे-धीरे वे इस बात को प्रभावित कर रहे हैं कि युवा स्वयं को कैसे प्रस्तुत करते हैं, अपनी लोकप्रियता को कैसे मापते हैं और कभी-कभी अपने मूल्य को भी इन्हीं आंकड़ों से जोड़ लेते हैं।

सोशल मीडिया ने निश्चित रूप से कई सकारात्मक बदलाव किए हैं। इसने युवाओं को भौगोलिक सीमाओं से परे संवाद करने, ज्ञान प्राप्त करने, अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और समान रुचियों वाले लोगों के समुदाय बनाने के अवसर दिए हैं। छोटे शहर का एक विद्यार्थी दुनिया भर के विशेषज्ञों से सीख सकता है। एक युवा कलाकार अपनी कला को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचा सकता है।

लेकिन हर अवसर के साथ जिम्मेदारी भी आती है। जब लोकप्रियता एक आंकड़ा बन जाए, पहले लोकप्रियता व्यक्तिगत संबंधों, स्कूल की गतिविधियों, पड़ोस के मेल-जोल और सामुदायिक भागीदारी से महसूस की जाती थी। आज लोकप्रियता स्क्रीन पर दिखाई देने वाले एक आंकड़े से भी मापी जा सकती है।

एक युवा के मन में सवाल उठ सकते हैं: मेरी तस्वीर को कितने लोगों ने लाइक किया? मेरे दोस्त को मुझसे ज्यादा टिप्पणियां क्यों मिलीं? मेरी वीडियो को कम व्यूज क्यों मिले?

दूसरे लोग मुझसे ज्यादा तेजी से फॉलोअर्स क्यों बना रहे हैं? ये सवाल धीरे-धीरे सोशल मीडिया को एक प्रतियोगिता में बदल सकते हैं। समस्या केवल आंकड़े में नहीं है। वास्तविक चिंता तब पैदा होती है जब कोई संख्यात्मक संकेत व्यक्ति के आत्मविश्वास को प्रभावित करने लगे। किसी पोस्ट को हजारों लाइक्स मिलना जरूरी नहीं कि वह जीवन की कोई बड़ी उपलब्धि हो। इसी तरह, कम लाइक्स मिलने का अर्थ यह नहीं कि उस व्यक्ति में प्रतिभा या योग्यता की कमी है।

मनुष्य के मूल्य को किसी एल्गोरिदम से नहीं मापा जा सकता। **लगातार स्वीकृति की मनाविज्ञान** युवा स्वाभाविक रूप से स्वीकार्यता और प्रशंसा चाहते हैं। किशोरावस्था और युवावस्था के प्रारंभिक दौर में व्यक्ति की पहचान विकसित हो रही होती है और साथियों की राय महत्वपूर्ण हो सकती है। सोशल मीडिया इस प्रक्रिया में एक और स्तर जोड़ देता है, क्योंकि लाइक्स, प्रतिक्रियाओं और टिप्पणियों के माध्यम से स्वीकृति तुरंत मिल जाती है।

एक नोटिफिकेशन खुशी दे सकता है। नोटिफिकेशन न मिलने पर निराशा हो सकती है। इस चक्र की बार-बार पुनरावृत्ति कुछ लोगों को बार-बार अपना फोन देखने के लिए प्रेरित कर सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सोशल मीडिया इस्तेमाल करने वाला हर युवा इसके साथ अस्वस्थ संबंध बना लेगा। हर व्यक्ति का अनुभव अलग होता है। लेकिन अत्यधिक निर्भरता की संभावना डिजिटल जागरूकता को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है।

युवाओं को समझना चाहिए कि सोशल मीडिया पर मिलने वाली प्रतिक्रिया वास्तविक मित्रता, सम्मान या उपलब्धि के समान नहीं होती। **तुलना का जाल** हमें दूसरों की ज़िंदगी की एक अवमंथित तस्वीर बन सकती है। एक विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थी की सफलता देखकर उसके पीछे की वर्षों की मेहनत भूल सकता है। कोई महंगी यात्रा की तस्वीर देख सकता है, लेकिन उसके पीछे की आर्थिक परिस्थितियों को नहीं जानता। कोई युवा संपादित तस्वीर देखकर अपनी प्राकृतिक शक्ति-सुरत की तुलना उससे कर सकता है। ऐसी तुलनाएं धीरे-धीरे आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकती हैं।

स्वस्थ दृष्टिकोण यह याद रखना है कि सोशल मीडिया एक खिड़की है, पूरा घर नहीं। **रचनात्मकता से प्रदर्शन तक** सोशल मीडिया ने रचनात्मकता के अर्थ को भी बदल दिया है। पहले युवा गाते, चित्र बनाते, लिखते, नृत्य करते या कुछ बनाते थे क्योंकि उन्हें एक कलाकार बनना अच्छा लगता था। आज रचनात्मक गतिविधियां तुरंत “कंटेन्ट” बन सकती हैं।

सोशल मीडिया अक्सर पूरी ज़िंदगी नहीं, बल्कि कुछ क्षण प्रस्तुत करता है। लोग आम तौर पर अपनी खुशियां, उपलब्धियां, सुंदर तस्वीरें, यात्राएं, सफल परियोजनाएं और यादगार पल साझा करते हैं। कठिनाइयां, असफलताएं, पारिवारिक समस्याएं, आर्थिक दबाव और निजी संघर्ष अक्सर दिखाई नहीं देते। परिणामस्वरूप, एक युवा अपने जीवन के किसी सामान्य दिन की तुलना दर्जनों अन्य लोगों के जीवन के चुने हुए सुखद पलों से करने लगता है।

हर तस्वीर पोस्ट करना आवश्यक नहीं। हर उपलब्धि की घोषणा करना जरूरी नहीं। हर निजी पल के लिए दर्शकों की आवश्यकता नहीं। कभी-कभी सबसे मूल्यवान अनुभव वही होते हैं जो निजी रहते हैं।

सोशल मीडिया का सकारात्मक पक्ष सोशल मीडिया को केवल समस्या के रूप में देखना उचित नहीं होगा। समझदारी से इस्तेमाल किया जाए तो यह एक शक्तिशाली शैक्षिक और सामाजिक साधन बन सकता है। युवा व्याख्यान, दृष्टीरियल, वैज्ञानिक खोजों, करिअर मार्गदर्शन, छात्रवृत्ति संबंधी जानकारी, भाषा सीखने के संसाधनों और शैक्षिक समुदायों तक पहुंच बना सकते हैं। सोशल मीडिया महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को भी लोगों तक पहुंचा सकता है। युवा स्वयंसेवक अभियान चला सकते हैं, पर्यावरण जागरूकता बढ़ा सकते हैं, वैध सामाजिक कार्यों के लिए सहायता जुटा सकते हैं और आपातकाल के

समय लोगों को जोड़ सकते हैं। ग्रामीण या आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों से जुड़े विद्यार्थियों के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म कभी-कभी ऐसी जानकारी तक पहुंच उपलब्ध करा सकते हैं, जो पहले प्राप्त करना कठिन था। इसलिए उद्देश्य तकनीक को अस्वीकार करना नहीं होना चाहिए। उद्देश्य तकनीकी समझ और उसके जिम्मेदार उपयोग की परिपक्वता विकसित करना होना चाहिए।

फॉलोअर्स हमेशा दोस्त नहीं होते एक और महत्वपूर्ण बात फॉलोअर्स और वास्तविक रिश्तों के बीच अंतर से जुड़ी है। किसी व्यक्ति के हजारों फॉलोअर्स हो सकते हैं, लेकिन उसे वास्तव में समझने और सहयोग देने वाले लोग बहुत कम हो सकते हैं। इसके विपरीत, किसी व्यक्ति की ऑनलाइन उपस्थिति बहुत छोटी हो सकती है, लेकिन उसके पारिवारिक संबंध और गहरी मित्रताएं बहुत मजबूत हो सकती हैं।

माता-पिता और शिक्षकों की जिम्मेदारी माता-पिता को हर युवा की सोशल मीडिया गतिविधियों के नैतिक कमी के रूप में नहीं देखना चाहिए। केवल यह कहना कि “फोन रख दो” हमेशा मूल समस्या का समाधान नहीं करता। युवाओं को लगातार आलोचना की बजाय मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

माता-पिता तकनीक-मुक्त पारिवारिक बातचीत, बाहरी गतिविधियों, पढ़ने और शौक को प्रोत्साहित कर सकते हैं। शिक्षक डिजिटल नागरिकता, ऑनलाइन गोपनीयता, गलत सूचना, साइबर बुलिंग और जिम्मेदार कंटेन्ट निर्माण के बारे में चर्चा कर सकते हैं।

स्कूलों को भी विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि सफलता के कई आयाम होते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि महत्वपूर्ण है, लेकिन जिज्ञासा, चरित्र, सहयोग, रचनात्मकता, शारीरिक स्वास्थ्य, सहानुभूति और जिम्मेदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।

सफलता की नई परिभाषा बदलती युवा पीढ़ी को सफलता की एक व्यापक परिभाषा की आवश्यकता है। सफलता का अर्थ सबसे अधिक फॉलोअर्स होना नहीं होना चाहिए। सफलता का अर्थ ज्ञान, कौशल, चरित्र और समाज के लिए सकारात्मक योगदान देने की क्षमता विकसित करना होना चाहिए।

किसी युवा वैज्ञानिक के किसी मनोरंजनकर्ता से कम फॉलोअर्स हो सकते हैं, लेकिन वह महत्वपूर्ण खोज कर सकता है। किसी शिक्षक को किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से कम लाइक्स मिल सकते हैं, लेकिन वह सैकड़ों जीवन बदल सकता है। किसान, नर्स, इंजीनियर,

कलाकार, समाजसेवी या माता-पिता बिना ऑनलाइन प्रसिद्ध हुए भी समाज में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। दिखाई देना और मूल्यवान होना एक ही बात नहीं है।

डिजिटल लोकप्रियता से वास्तविक उद्देश्य की ओर आज की युवा पीढ़ी के सामने चुनौती यह नहीं है कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना है या नहीं। डिजिटल प्लेटफॉर्म आधुनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। वास्तविक चुनौती यह है कि तकनीक एक साधन बनी रहे, जीवन की मालिक न बन जाए।

युवाओं को स्वयं से पृष्ठना चाहिए: “क्या मैं सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा हूँ, या सोशल मीडिया मेरे ध्यान का उपयोग कर रहा है?”

उन्हें फॉलोअर्स की सराहना करनी चाहिए, लेकिन उन पर निर्भर नहीं होना चाहिए। लाइक्स का आनंद लेना चाहिए, लेकिन उनके बिना स्वयं को अधूरा नहीं समझना चाहिए। तकनीक का उपयोग करना चाहिए, लेकिन अपनी पहचान को उसके हवाले नहीं करना चाहिए।

स्वस्थ विचारों को अर्थ यह नहीं कि ऑनलाइन बिताया गया समय हमेशा सबसे कम हो। इसका अर्थ यह है कि ऑनलाइन गतिविधियों के साथ सीखने, रीशों, रचनात्मकता, शारीरिक गतिविधि, चिंतन और वास्तविक जीवन के अनुभवों के लिए भी संतुलित स्थान हो।

भविष्य उस पीढ़ी का है जो तकनीक का बुद्धिमान से उपयोग कर सके और अपनी स्वतंत्र सोच को तकनीक के हवाले न करे। लाइक्स मिट सकते हैं। फॉलोअर्स छोड़ सकते हैं। एल्गोरिदम बदल सकते हैं। लेकिन ज्ञान, चरित्र, सार्थक रीशे और समाज के लिए किया गया वास्तविक योगदान ऐसी विरासत बना सकते हैं, जिसे सोशल मीडिया का कोई भी आंकड़ा माप नहीं सकता।

— डॉ. विजय गर्ग
रिटायर्ड प्रिंसिपल | एमिनेंट एजुकेशनलिस्ट
स्ट्रीट कोर चंद, मलोट, पंजाब — 152107

संवादकीय विशेष

नई दिल्ली, सोमवार 05 अक्टूबर, 2026

06

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

संवादकीय चिंतन-मनन

</

अग्नि सुरक्षा जांच या मॉल की मार्केटिंग?



प्लूटोन मॉल के निरीक्षण को लेकर अग्निशमन विभाग की कार्यशैली पर सवाल सुरक्षा ऑडिट के बजाय सोशल मीडिया प्रदर्शन का संदेश? विभागीय कार्रवाई की पारदर्शिता पर उठे सवाल

रिपोर्ट ड़ा राजकुमार यादव परिवहन विशेष राउरकेला

शहर में अग्नि सुरक्षा व्यवस्थाओं की जांच के तहत अग्निशमन विभाग की टीम ने

शनिवार को प्लूटोन मॉल का निरीक्षण किया। टीम ने फायर अलार्म, वाटर स्प्रिंकलर, फायर बॉल और अन्य आपातकालीन सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मॉल के प्रशिक्षित कर्मचारियों ने सुरक्षा उपकरणों के संचालन का व्यावहारिक प्रदर्शन भी किया।

नियमित अग्नि सुरक्षा निरीक्षण सार्वजनिक हित से जुड़ी महत्वपूर्ण प्रशासनिक प्रक्रिया है। बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में आग जैसी आपात स्थिति से निपटने के लिए निर्धारित मानकों का पालन हो रहा है या नहीं, इसकी निष्पक्ष जांच जरूरी है। लेकिन इस निरीक्षण की प्रस्तुति और सोशल मीडिया-केंद्रित शैली को लेकर सवाल उठना भी स्वाभाविक है।

निरीक्षण के दौरान सुरक्षा उपकरणों के प्रदर्शन और उसकी तस्वीरों अथवा वीडियो प्रस्तुति पर यदि अपेक्षाकृत अधिक जोर दिखाई दे, जबकि निरीक्षण के वास्तविक निष्कर्ष—कौन-कौन से मानक जांचे गए, कौन से दरतावेज देखे गए, उपकरणों का प्रमाणन और



वैधता क्या है, रखरखाव की स्थिति कैसी है तथा कोई कमी पाई गई या नहीं—सार्वजनिक रूप से स्पष्ट न हों, तो पूरी कवायद अग्नि सुरक्षा ऑडिट से अधिक सोशल मीडिया या रीलबाजी के प्रदर्शन जैसी प्रतीत होने लग सकती है।

सवाल यह नहीं है कि मॉल में फायर सेफ्टी उपकरण हैं या नहीं। असली सवाल यह है कि क्या वे निर्धारित मानकों के अनुरूप प्रमाणित, कार्यशील और नियमित रूप से मटेन किए जा रहे हैं? निरीक्षण का उद्देश्य कैमरे के सामने उपकरणों का प्रदर्शन कराना नहीं, बल्कि उनकी वास्तविक प्रभावशीलता और अनुपालन की जांच करना होना चाहिए।

यह किसी एक प्रतिष्ठान के खिलाफ टिप्पणी नहीं है। बल्कि यह

अग्निशमन विभाग की कार्यप्रणाली से जुड़ा व्यापक संस्थागत प्रश्न है। यदि शहर के किसी छोटे प्रतिष्ठान, होटल, अस्पताल, बाजार या बड़े मॉल का निरीक्षण किया जाता है, तो सभी के लिए एक समान चेकलिस्ट, समान मानदंड और समान सार्वजनिक सूचना व्यवस्था होनी चाहिए।

अग्नि सुरक्षा जीवन और संपत्ति की सुरक्षा से जुड़ा विषय है, प्रचार का माध्यम नहीं। इसलिए विभाग को यह स्पष्ट करना चाहिए कि प्लूटोन मॉल के निरीक्षण में क्या-क्या जांचा गया, क्या कमियां मिलीं और क्या अनुपालन पाया गया। सरकारी निरीक्षण की विश्वसनियता कैमरे के सामने की गतिविधि से नहीं, बल्कि उसकी निष्पक्ष रिपोर्ट और कार्रवाई से तय होती है।

राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन में नई पहल, क्षेत्रीय डिवीजन का गठन

रिपोर्ट: डॉ राजकुमार यादव, परिवहन विशेष, राउरकेला

राउरकेला। ब्राह्मणी क्लब परिसर में राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। बैठक में ग्रीडिशा के परिवहन क्षेत्र से जुड़ी संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय, संगठनात्मक मजबूती तथा ट्रांसपोर्ट कारोबार से जुड़े जमीनी विवादों और समस्याओं के त्वरित समाधान को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक में राज्यस्तरीय ट्रांसपोर्ट संस्थाओं के लिए एक अलग डिवीजन गठित करने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही स्थानीय और आंचलिक स्तर पर अल्पवय होने वाली समस्याओं के समाधान के लिए ग्राह सदस्यीय पदाधिकारी दल का चयन किया गया। यह टीम ट्रांसपोर्टर्स, वाहन मालिकों और परिवहन क्षेत्र से जुड़े अन्य पक्षों के बीच समन्वय स्थापित करने तथा आवश्यक मामलों को संगठनात्मक स्तर पर रखने का काम करेगी। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि ग्रीडिशा का गुड्स ट्रांसपोर्ट सेक्टर आज कई चुनौतियों से गुजर रहा है। डीजल, टायर, सेक्टर पाटर्स, बीमा, टोल और वाहन रखरखाव की बढ़ती लागत

के बीच माल दुर्गाई की दों पर दबाव लगातार बढ़ रहा है। वहीं, ट्रांसपोर्ट के कमीशन, बुकिंग मार्जिन और भुगतान की पारदर्शिता को लेकर भी कई स्तरों पर अस्ंतोष सामने आता रहा है। नवीनवीथित टीम का सम्मान: नवीनवीथित पदाधिकारियों का वरिष्ठ सदस्यों ने अंगदस्व एवं पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया और उन्हें संगठनात्मक जिम्मेदारियों के निर्द्वन्द्व के लिए शुभकामनाएं दीं। बैठक में उपस्थित रहे प्रमुख सदस्य: राम गेहर शर्मा, चरणजीत सिंह, दिलीप अग्रवाल, अश्विनी साह, जगदीश खरित, नंदकिशोर सिंह, शंकर लाल शर्मा, संगीत सिन्हा, मानस मोहंती, रामाज्ञा प्रसाद, मुनींद सिंह, वंदन बेर्रा और जगन्नाथ पंडा सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। सभा की अध्यक्षता राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने की। बैठक में लगभग सौ सदस्यों की भागीदारी ने संगठन की व्यापक सदस्य-आधार और परिवहन क्षेत्र में सामूहिक संवाद की आवश्यकता को रेखांकित किया। <http://www.newsparivahan.com>

ट्रांसपोर्टर्स की समस्याओं के समाधान के लिए आठ सदस्यीय आंचलिक टीम गठित



ब्राह्मणी क्लब में आयोजित बैठक में मौजूद नवगठित आठ सदस्यीय आंचलिक टीम — फोटो: परिवहन विशेष



बैठक को संबोधित करते हुए अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव, मंच पर उपस्थित पदाधिकारी



बैठक में बड़ी संख्या में उपस्थित ट्रांसपोर्ट संगठन की भविष्य की रणनीति पर चर्चा करते हुए

स्वच्छता ही सेवा एक राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान के अंतर्गत बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

रिपोर्ट संतोष कुमार सिंह, परिवहन विशेष समाचार पत्र वाराणसी

बैंक ऑफ बड़ौदा अंचल कार्यालय वाराणसी एवं क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी के संयुक्त तत्वावधान में स्वच्छता ही सेवा एक राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान के अंतर्गत काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया यह पहल स्वच्छता, स्वस्थ एवं हरित भारत के निर्माण की दिशा में बैंक की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। कार्यक्रम में बैंक ऑफ बड़ौदा के वाराणसी अंचल के महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख मिथिलेश कुमार, उप महाप्रबंधक (अनुपालन एवं आवासन) मनोज कुमार बक्शी, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख वाराणसी क्षेत्र भारत भूषण, डॉ. पुनीत एमएस सर सुंदर लाल अस्पताल बीएचयू, अश्वनी कुमार देशवाल, वरिष्ठ अधिकारी, बागवानी विभाग, ओम प्रकाशनानन्द, सुपर वाइजर, बागवानी विभाग सहित बैंक एवं बीएचयू के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर बैंक



अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पौधारोपण किया गया। महाप्रबन्धक मिथिलेश कुमार द्वारा परिसर की स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और हरित परिसर के महत्व पर प्रकाश डाला गया। अपने संबोधन में आपने कहा कि स्वच्छता केवल हमारे घरों और आसपास के क्षेत्रों तक सीमित नहीं है बल्कि यह प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण से भी जुड़ी हुई है। अधिक से अधिक

वृक्ष लगाकर, उनकी नियमित देखभाल कर तथा स्वच्छता के प्रति जागरूक रहकर हम आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, सुंदर और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित कर सकते हैं। कार्यक्रम के माध्यम से स्वच्छता पखवाड़ा के उद्देश्यों को जन-जन तक पहुंचाने और स्वच्छता के साथ पर्यावरण संरक्षण को जीवनशैली का हिस्सा बनाने का संदेश दिया गया।

सरकारी हैंडपंप चोरी हुआ या जिम्मेदारी भी गढ़े में दफन कर दी गई? आम जनता के पैसे से लगाए गए नलकूप को उखाड़ ले जाने के बाद विभाग ने गड़्हा मिट्टी-रेत से भर दिया, पुलिस कार्रवाई क्यों नहीं?

नलकूप गायब, शिकायत और कार्रवाई के बजाय मामले पर पर्दा डालने की कोशिश? जिम्मेदार विभाग की भूमिका पर गंभीर सवाल

रिपोर्ट ड़ा राजकुमार यादव परिवहन विशेष राउरकेला

टीसीआई - आम जनता की सुविधा और सरकारी धन से स्थापित एक हैंडपंप के कथित रूप से उखाड़कर ले जाने का मामला अब सिर्फ एक नल के गायब होने तक सीमित नहीं रह गया है। यह घटना सरकारी संपत्ति की सुरक्षा, विभागीय जवाबदेही और प्रशासन की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर रही है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि यदि सार्वजनिक धन से लगाया गया हैंडपंप गायब हो गया, तो इसे चोरी मानकर पुलिस कार्रवाई की पहल क्यों नहीं की गई?

स्थानीय स्तर पर सामने आई जानकारी के अनुसार, जिस स्थान पर हैंडपंप लगाया गया था, वहां अब उसका कोई अस्तित्व नहीं है। इतना

ही नहीं, हैंडपंप लगाए जाने के बाद बने गढ़े को रेत और मिट्टी से भर दिया गया है। इससे मामला और गंभीर हो जाता है। सवाल उठता है कि हैंडपंप को किसने उखाड़ा, किसके आदेश पर हटाया गया और उसे कहाँ ले जाया गया?

यदि हैंडपंप विभागीय संपत्ति था और उसे बिना सक्षम अनुमति के कोई व्यक्ति या समूह उखाड़कर ले गया, तो प्रथम दृष्टया यह सरकारी संपत्ति के अनधिकृत हटाने अथवा चोरी का मामला बन सकता है। ऐसे में विभाग की जिम्मेदारी थी कि पूरे घटनाक्रम की जांच कराई जाती और आवश्यकता पड़ने पर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई जाती। लेकिन क्या ऐसा किया गया? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?

और यदि हैंडपंप विभागीय आदेश से हटाया गया था, तो उसका लिखित आदेश, संबंधित अधिकारी की अनुमति, हटाने का कारण और वर्तमान में उसकी स्थिति सार्वजनिक क्यों नहीं की जा रही है? आम लोगों का कहना है कि सरकारी योजनाओं में खर्च होने वाला पैसा जनता की मेहनत का कमाई है। किसी सरकारी संपत्ति के



गायब हो जाने के बाद सिर्फ गड़्हा भर देना समस्या का समाधान नहीं हो सकता। इससे यह सवाल और गहरा होता है कि कहीं मामले को दबाने या खत्म करने का प्रयास तो नहीं किया गया।

सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि पुलिसिया कार्रवाई के लिए विभाग ने पहल क्यों नहीं की और किसके दबाव में मामले को आगे नहीं बढ़ाया

गया? इन सवालों का जवाब संबंधित विभाग और प्रशासन को देना चाहिए।

सरकार यदि पारदर्शिता और जवाबदेही की बात करती है, तो ऐसे मामलों में कार्रवाई भी दिखाई देनी चाहिए। हैंडपंप छोटा संसाधन हो सकता है, लेकिन उसकी चोरी या अनधिकृत तरीके से हटाया जाना सरकारी संपत्ति की सुरक्षा व्यवस्था

की बड़ी परीक्षा है। मामला छोटा समझकर छोड़ दिया गया तो यह संदेश जाएगा कि सार्वजनिक संपत्ति गायब होने पर भी जिम्मेदारी तय नहीं होगी। इसलिए पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच, हैंडपंप की बरामदगी अथवा उसके हटाए जाने की वैधता की जांच और दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई जरूरी है।

डालिएम्स सनबीम स्कूल में ‘एजु-फेयर- 2026’ का आयोजन, विद्यार्थियों को करियर के विविध अवसरों की दी जानकारी

एजु-फेयर में 2500 से अधिक अभिभावकों ने लिया हिस्सा, स्कूल- कॉलेज प्रतिनिधियों ने उच्च शिक्षा की राह दिखाई

रिपोर्ट संतोष कुमार सिंह, परिवहन विशेष समाचार पत्र वाराणसी

डालिम्स सनबीम स्कूल एंड हॉस्टल रोहनियां वाराणसी के सभागार में ‘एजु-फेयर-2026’ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कक्षा 12 के बाद विद्यार्थियों को उनकी रुचि, क्षमता एवं आर्थिक स्थिति के अनुरूप विभिन्न शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रवेश एवं करियर के अवसरों की जानकारी उपलब्ध कराना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप ‘बाबा’ मधोक, निर्देशिका पूजा मधोक, अतिरिक्त निदेशक माहिर मधोक एवं विद्यालय की प्रधानाचार्या गुरमीत कौर ने संयुक्त रूप से संस्था के संस्थापकद्वय डॉ. अमृतलाल इशरत एवं मैडम दीशा

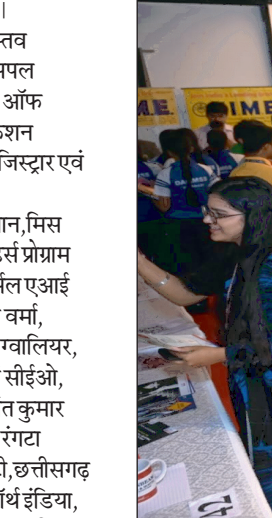
इशरत की प्रतिमूर्ति पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत स्मृति-चिह्न एवं बुके भेंट कर किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने अतिथियों के सम्मान में स्वागत-गीत की मनमोहक प्रस्तुति भी दी।

अपने स्वागत संबोधन में संस्था के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप ‘बाबा’ मधोक ने विद्यालय में आयोजित एजु-फेयर के अनुभवों को साझा करते हुए विद्यार्थियों को उनकी बौद्धिक क्षमता, रुचि एवं आर्थिक स्थिति के अनुसार करियर का चयन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि सही समय पर उचित मार्गदर्शन विद्यार्थियों को अपने भविष्य की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एजु-फेयर के दौरान ‘पैरल डिस्कशन’ का भी आयोजन किया गया जिसमें युवाओं के लिए शिक्षा और विश्वविद्यालयों के बीच मध्यस्थता किस प्रकार की जाए इस विषय पर विस्तृत चर्चा हुई। परिचर्चा में डालिम्स सनबीम स्कूल सिगरा की प्रधानाचार्या प्रतिभा त्रिवेदी सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों के

प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम में प्रतीक श्रीवास्तव एसोसिएट डायरेक्टर एवं प्रिंसिपल एप्लीकेशन, एमपी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड कंप्यूटर एप्लीकेशन वाराणसी, प्रो. शिवेन्द्र माथुर, रजिस्ट्रार एवं डीन, इंडस्ट्रीज लिंकड प्रोग्राम, एनआईआईटी राजस्थान, मिस इशिका पाण्डेय, कैपस एंवेसडर्स प्रोग्राम एंड असिस्टेंट मैनेजर, यूनिवर्सल एआई यूनिवर्सिटी, महाराष्ट्र, डॉ. ऋषा वर्मा, रजिस्ट्रार, विक्रान्त यूनिवर्सिटी, वलालियर, डॉ. साकत मदनो, फार्डर एवं सीईओ, कैरियरओसिटी वाराणसी, हेमंत कुमार सिंह, एडमिशन एंड मार्केटिंग, रंगटा इंटरनेशनल रिकम यूनिवर्सिटी, छत्तीसगढ़ तथा अक्षय नन्द, एरिया हेड नॉर्थ इंडिया, एसएसएम यूनिवर्सिटी, आंध्र प्रदेश सहित कई शिक्षाविद एवं विश्वविद्यालय प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

परिचर्चा का मुख्य विषय ‘2047 में भारत अगले दस लाख करियर कहाँ से आएंगे’ पर आधारित रहा। विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को बदलते तिवारी (सर्जन), डॉ. सत्य प्रकाश, डॉ. सुमंत शेखर (नेत्र विशेषज्ञ), डॉ. शोला रंजन (गैस्ट्रोएलॉजिस्ट), अपूर्वा सिन्हा (जनरल फिजिशियन), डॉ. शेखर प्रशांत (दंत विशेषज्ञ) तथा 44वीं वाहिनी के डॉ. सुधांशु कुमार (जीडीएमओ) ने ग्रामीणों की जांच और उपचार किया। इस अवसर पर द्वितीय कमान अधिकारी गोविंद उपलब्ध कराई गई। सहायक कमांडेंट रामवीर कुमार, नि./सा. रणविजय सिंह, मंजू कुमार (बीपीसी, प्रदेश मंत्री



शैक्षणिक परिवेश, उच्च शिक्षा के विकल्पों तथा भविष्य के रोजगार एवं करियर क्षेत्रों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी। संस्था की निर्देशिका पूजा मधोक ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि एजु-फेयर का उद्देश्य उन्हें देश के



विविन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों के प्रतिनिधियों से सीधे जुड़ने तथा संवाद करने का अवसर प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि इसके माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न संस्थानों की प्रवेश प्रक्रिया, पाठ्यक्रम एवं

उपलब्ध अवसरों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। संस्था के अतिरिक्त निदेशक माहिर मधोक ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि एजु-फेयर के माध्यम से उच्च शिक्षा में प्रवेश-प्रक्रिया, शुल्क, शैक्षणिक

ऋण, छात्रवृत्ति एवं अन्य वित्तीय समस्याओं के समाधान के संबंध में भी आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है।

इस अवसर पर डालिम्स सनबीम स्कूल समूह (सिंगर, रामकटोरा, पहड़ियां एवं रोहनियां) तथा फ्रेंचाइजी सेंट्रल, एनटीपीसी टांडा गांधी नगर, करीमुद्दीनपुर एवं चक्रिया से लगभग 475 अभिभावकों ने सहभागिता की। इसके अलावा वाराणसी के शिशु भारती पब्लिक स्कूल, ज्ञानदीप एकेडमिक एवं आर्यन पब्लिक स्कूल से लगभग 750 अभिभावक अपने बच्चों के साथ एजु-फेयर में पहुंचे और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम के समापन पर विद्यालय की प्रधानाचार्या गुरमीत कौर ने सभी अतिथियों, शिक्षाविदों, अभिभावकों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक आयोजन विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं लाभदायक सिद्ध होते हैं और भविष्य में भी विद्यालय द्वारा ऐसे आयोजन किए जाते रहेंगे।

सीमावर्ती गांव में 44वीं वाहिनी एसएसबी ने लगाया स्वास्थ्य शिविर

275 ग्रामीणों की हुई स्वास्थ्य जांच, निःशुल्क दवाओं का किया गया वितरण रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र नरकटियागंज

परिवहन विशेष न्यूज

44वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल नरकटियागंज की ओर से रविवार को कमांडेंट बलवंत सिंह नेगी के नेतृत्व में ‘जी’ समवाय बलबल के कार्यक्षेत्र स्थित राजकीय बुनियादी विद्यालय, दोमट में विशेष मानव स्वास्थ्य

शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन रोटरी क्लब बेतिया सेंट्रल के सहयोग से किया गया।

शिविर में सीमावर्ती क्षेत्र के पुरुषों, महिलाओं, युवाओं और बच्चों सहित कुल 275 ग्रामीणों ने स्वास्थ्य जांच कराई। चिकित्सकों ने विभिन्न रोगों से संबंधित परामर्श और जांच की तथा सभी जरूरतमंदों को निःशुल्क दवाएं उपलब्ध कराई गईं। स्वास्थ्य शिविर में रोटरी क्लब बेतिया सेंट्रल के डॉ. प्रदीप कुमार (कान विशेषज्ञ), डॉ. प्रमोद

तिवारी (सर्जन), डॉ. सत्य प्रकाश, डॉ. सुमंत शेखर (नेत्र विशेषज्ञ), डॉ. शोला रंजन (गैस्ट्रोएलॉजिस्ट), अपूर्वा सिन्हा (जनरल फिजिशियन), डॉ. शेखर प्रशांत (दंत विशेषज्ञ) तथा 44वीं वाहिनी के डॉ. सुधांशु कुमार (जीडीएमओ) ने ग्रामीणों की जांच और उपचार किया। इस अवसर पर द्वितीय कमान अधिकारी गोविंद उपलब्ध कराई गई। सहायक कमांडेंट रामवीर कुमार, नि./सा. रणविजय सिंह, मंजू कुमार (बीपीसी, प्रदेश मंत्री

भाजपा), सूरज कुमार (प्रदेश कार्यकारिणी भाजपा) और कन्हैया ठाकुर सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

एसएसबी अधिकारियों ने कहा कि ऐसे स्वास्थ्य शिविरों का उद्देश्य सीमावर्ती ग्रामीणों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ उनमें स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाना है। इस तरह के आयोजन से सीमावर्ती जनता और सुरक्षकों के बीच विश्वास, सौहार्द, सहयोग और संवाद को भी मजबूती मिलती है।



टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत



म्यूल अकाउंट्स की तलाश करें ताकि “डिजिटल अरेस्ट” और निवेश धोखाधड़ी, ट्रेडिंग धोखाधड़ी जैसी दर्जनों वित्तीय ठगी को समाप्त किया जा सके।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने कई मामलों में यह स्पष्ट किया है कि धोखाधड़ी की रकम को म्यूल अकाउंट्स के माध्यम से

आज का साइबर सुरक्षा विचार

छिपाने वालों का पता लगाना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उन “डिजिटल अरेस्ट” कॉलर्स को पकड़ना जो सीधे पीड़ितों को धमकाते हैं। हाल ही में ₹2.65 करोड़ की ठगी वाले मामले में अदालत ने अग्रिम जमानत से इनकार किया और कहा कि वित्तीय हैंडलर्स भी साइबर अपराध नेटवर्क को बनाए रखने में समान रूप से दोषी हैं।

केस :

- पीड़ित: एक वरिष्ठ नागरिक ने ₹2.65 करोड़ गंवाए जब उन्हें Skype/फोन पर TRAI, मुंबई पुलिस और CBI अधिकारियों के रूप में

जिसने दावा किया कि भुगतान मोबाइल फोन के लिए था।

न्यायालय की टिप्पणियाँ:

- डिजिटल अरेस्ट घोटाले में अधिकारियों का प्रतिरूपण, मानसिक दबाव और तेजी से फंड ट्रांसफर शामिल होता है।
- म्यूल अकाउंट्स के जरिए धोखाधड़ी की रकम संभालने वाले जांच में कॉलर्स जितने ही महत्वपूर्ण हैं।
- कानूनी स्थिति: ० सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों का हवाला देकर वित्तीय हैंडलर्स की जवाबदेही पर जोर दिया गया।

माना गया।

- ० अग्रिम जमानत अस्वीकार की गई।
- व्यापक प्रभाव:**
- कानून प्रवर्तन: ० फ्रंटलाइन कॉलर्स और वित्तीय चैनलों दोनों का पीछा करना आवश्यक।
- ० म्यूल अकाउंट्स साइबर धोखाधड़ी की रीढ़ हैं, जो मनी लॉन्ड्रिंग और फंड्स के फैलाव को सक्षम बनाते हैं।
- न्यायिक दिशा: ० सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों का हवाला देकर वित्तीय हैंडलर्स की जवाबदेही पर जोर दिया गया।

– जन जागरूकता: ० नागरिकों को जानना चाहिए कि बैंक अकाउंट किराए पर देना या साझा करना अवैध है।

० पीड़ितों को संदिग्ध कॉल तुरंत 1930 साइबर हेल्पलाइन पर रिपोर्ट करनी चाहिए।

उपाय:

- म्यूल अकाउंट्स का पता लगाना = धोखेबाज कॉलर्स का पता लगाना। दोनों साइबर अपराध नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए अनिवार्य हैं।
- वित्तीय हैंडलर्स समान रूप से उत्तरदायी हैं और उन पर भारतीय न्याय संहिता (BNS) की संबंधित धाराओं के तहत सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।



ढेंकानाल से ब्रह्मपुर के लिए नई ट्रेन चलाने की मांग

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: ढेंकानाल रेलवे स्टेशन अंग्रेजों के शासनकाल का स्टेशन है। पहले सुबह तालचैर—पुरी ट्रेन नराज होते हुए पुरी जाती थी। बाद में इसे बदलकर अंगुल—पुरी कर दिया गया। इसी तरह ढेंकानाल—पुरी ट्रेन कटक के रास्ते पुरी जाती थी, जिसे बाद में बदलकर तालचैर—पुरी कर दिया गया। इस कारण रेलवे के नक्शे से धीरे-धीरे ढेंकानाल का नाम ही गायब होता जा रहा है। ढेंकानाल से यात्रा करने वाले यात्रियों को ट्रेन में एक सीट मिलना भी सपना जैसा लगता है। प्रतिदिन ढेंकानाल से करीब एक हजार लोग विभिन्न गंतव्यों के लिए यात्रा करते हैं। इसके अलावा बड़ी संख्या में सरकारी और निजी कर्मचारी भी नियमित रूप से ढेंकानाल से आवागमन करते हैं।

यदि सुबह के समय



ढेंकानाल से ब्रह्मपुर के लिए एक ट्रेन चलाई जाए, तो ढेंकानाल रेलवे स्टेशन पर निर्भर हजारों लोगों को इसका लाभ मिलेगा। साथ ही अंग्रेजों के शासनकाल के इस ऐतिहासिक स्टेशन का नाम भी ट्रेन के माध्यम से रेलवे के

नक्शे पर प्रमुखता से बना रहेगा।

राष्ट्रीय विकास सेना के राष्ट्रीय सचिव मनोरंजन शासमल ने मांग की है कि सुबह 8:30 बजे ढेंकानाल से ब्रह्मपुर के लिए एक नई ट्रेन प्रतिदिन चलाई जाए।

ओडिशा में विभिन्न संरक्षण उपायों, अनुसंधान, प्रकाशनों और इको-टूरिज्म परियोजनाओं के साथ राज्यस्तरीय वन्यजीव सप्ताह समारोह

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूवनेश्वर: वन्यजीव संरक्षण, वैज्ञानिक अनुसंधान, पर्यावरण जागरूकता और जिम्मेदार इको-टूरिज्म को और मजबूत करने के उद्देश्य से ओडिशा में राज्यस्तरीय वन्यजीव सप्ताह समारोह-2026 आज भुवनेश्वर स्थित लोकसेवा भवन के राज्य सम्मेलन केंद्र में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन तथा श्रम एवं कर्मचारी राज्य बीमा मंत्री श्री गणेश राम सिंघुटिया उपस्थित रहे।

मंत्री ने कहा कि वन्यजीव सप्ताह केवल वन्यजीवों के प्रति हमारे प्रेम को व्यक्त करने का अवसर नहीं है, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच गहरے संबंध को और मजबूत करने तथा वन्यजीव संरक्षण के प्रति नए संकल्प लेने का अवसर भी है। पिछले दो वर्षों के दौरान वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में ओडिशा ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इन उपलब्धियों के पीछे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आधुनिक तकनीक और मजबूत प्रशासनिक कदमों के साथ-साथ वन कर्मचारियों एवं स्थानीय समुदायों का समर्पित योगदान रहा है।

कार्यक्रम में वन्यजीव शाखा की विभिन्न उपलब्धियों तथा सप्ताह भर चले वन्यजीव जागरूकता कार्यक्रमों से संबंधित वीडियो प्रदर्शित किए गए। इस अवसर पर CM-GROW (Chief Minister's Grant for Research on Odisha's Wildlife) योजना का शुभारंभ किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य ओडिशा में वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना और अनुसंधान आधारित संरक्षण उपायों को और मजबूत करना है।

वन्यजीव सप्ताह के अवसर पर ओडिशा के विभिन्न डू-टूर इको-टूरिज्म गंतव्यों का ऑनलाइन उद्घाटन किया गया। इनमें चंदका वन्यजीव अभ्यारण के पीकबैक वैली और नागेश्वर डैम, सिमिलिपाल उत्तर वन्यजीव प्रभाग के विभिन्न पर्यटन स्थल, चिलिका वन्यजीव प्रभाग का करखोल, संबलपुर पिडियाघर तथा हीराकुद वन्यजीव प्रभाग की विजिटर सुविधाएं आदि शामिल हैं।

इस अवसर पर “द बायोडायवर्सिटी ऑफ इस्टर्न वाटर्स” फिल्म का भी शुभारंभ किया गया। ओडिशा की समृद्ध जैव विविधता और पूर्वी घाट के पारिस्थितिक मलत्त को प्रस्तुत करने



वाली इस फिल्म के साथ “द इंटरटाइड इकोसिस्टम ऑफ भितरकनिका” फिल्म का भी विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में “वाइल्डलाइफ ओडिशा—2026”, “द लॉन्ग वॉक टू सिमिलिपाल”, “एक्सप्लोर ओडिशा”, “ऑर्किड जेनेरा ऑफ ओडिशा इन पिकचर्स”, “महानदी में घड़ियाल की जीवनी”, “ट्रैकिंग द ओशन वांडरर्स”

और “टू फ्लेमिंगोज टू जर्नीज” सहित विभिन्न पुस्तकें, गाइड बुक, ग्लोशर और तकनीकी रिपोर्ट प्रकाशित की गईं। इन प्रकाशनों में ओडिशा की जैव विविधता, वन्यजीव संरक्षण, इको-टूरिज्म तथा विभिन्न प्रजातियों के सैटेलाइट टेलीमेट्री अध्ययनों से संबंधित जानकारी शामिल है।

समारोह में वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के प्रमुख

शासन सचिव श्री भास्कर ज्योति शर्मा, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डॉ. के. मुरुगेशन, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) एवं मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक श्री प्रेम कुमार झा, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) डॉ. मनोज बी. नायर सहित वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, वन्यजीव प्रेमी और पर्यावरणविद उपस्थित रहे।

-जिंदगी के साथ ही या जिंदगी के बाद भी

जीवन बीमा का नाम सुनते ही मन में एक ग़रोसा पैदा होता है, अगर कल मैं नहीं रहा, तो मेरे परिवार का क्या होगा? यही चिंता किसी व्यक्ति को अपनी आज की कमाई से से कुछ हिस्सा काटकर बीमा की किस्त भरने के लिए प्रेरित करती है। बीमा दरअसल भविष्य की अनिश्चितता के सामने परिवार के लिए खड़ी की गई आर्थिक दीवार है। लेकिन हाल में सामने आए आंकड़े इस दीवार की मजबूती से ज्यादा एक असहज सवाल खड़ा करते हैं, क्या जीवन बीमा वास्तव में जीवन की सुरक्षा पर केंद्रित है, या वह धीरे-धीरे एक बिक्री-केंद्रित वित्तीय उत्पाद बनता जा रहा है?

IRDAI के लॉगिया कैसलेटेशन पेपर में दिए आंकड़ों के मुताबिक, वित्त वर्ष २0१4-२5 में जीवन बीमा कंपनियों ने कुल 6.३ लाख करोड़ रुपये के लाभ/मुनाफा कमाए। इसमें 37 प्रतिशत यानी करीब २.33 लाख करोड़ रुपये सेक्टर/पॉलिसी बीव में छोड़ने वालों को गए, जबकि मृत्यु दावों का हिस्सा केवल 7 प्रतिशत यानी करीब 47 हजार करोड़ रुपये रहा। मैकरोल्टि मुनाफा का हिस्सा 35 प्रतिशत और एचयुटी/पेंशन तथा अन्य मुनाफा का करीब २० प्रतिशत रहा।

यह आंकड़ा अपने आप में बीमा कंपनियों को दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि जीवन बीमा केवल मृत्यु-लाभ वाला उत्पाद नहीं है। इसमें बचत, पेंशन और परियोजना जैसे उत्पाद भी शामिल हैं। लेकिन 37 प्रतिशत सेक्टर और केवल 7 प्रतिशत मृत्यु दावा एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक सवाल जरूर फुटते हैं, लोग पॉलिसियाँ आखिर इतनी बड़ी संख्या में बीव में क्यों छोड़ रहे हैं?

और वहीं दूसरा आंकड़ा और अधिक चिंता पैदा करता है। IRDAI के अनुसार, जीवन बीमा पॉलिसियों की 61वें मंखेने की persistency केवल 48 प्रतिशत है। यानी पाँच साल के आयामास पड़ने के तब आधे से ज्यादा पॉलिसीधारक अपनी पॉलिसियाँ जारी नहीं रख पा रहे हैं। इसके विपरीत, सीधे ऑनलाइन खरीदी गई पॉलिसियों में यही persistency लगभग 71 प्रतिशत बताई गई है। कुछ कंपनियों में दसवें वर्ष तक चालू रहने वाली पॉलिसियाँ का अनुपात केवल 8 प्रतिशत तक रह जाता है।

यह अंतर केवल एक संख्या नहीं है, यह बीमा बेचने के तरीके पर सवाल है।

जब कोई परिवार अपनी मेहनत की कमाई से पॉलिसी खरीदता है, तो उसे केवल एक दरतावेज नहीं मिलता, उसे ग़रोसा मिलता है। उसे लगता है कि उसने अपने परिवार के भविष्य को थोड़ा सुनिश्चित कर लिया है।

लेकिन यदि कुछ वर्षों बाद वह परिवार पॉलिसी छोड़ने के लिए मजबूर हो जाए और उसे अपनी जमा रकम का पूरा लाभ भी न मिले, तो सवाल आरक की समझ पर ही नहीं, उसे पॉलिसी समझाने वाले तंत्र पर भी उठना चाहिए।

IRDAI के उसी अध्ययन में यह भी सामने आया है कि कुछ बचत-आधारित जीवन बीमा उत्पादों में पहले वर्ष का अंशैत कमीशन २5 से 37 प्रतिशत तक है, जबकि कुछ भागलों में कुल वितरण लागत पहले वर्ष के प्रीमियम के मुकाबले 60 से 80 प्रतिशत तक पहुंच सकती है।

यही से बीमा का सबसे बड़ा संकेत शुरू होता है, जब सलाह और बिक्री के बीच की रेखा धुंधली हो जाए। आरक को यह बताया जाना चाहिए कि वह बीमा खरीद रहा है, निवेश कर रहा है या बचत योजना है। उसे जोखिम, लागत, लॉक-इन, सर्वेड वैल्यू और वास्तविक लाभ के बारे में अपनी ही स्पष्ट जानकारी मिलनी चाहिए जिससे त्रितीय आकर्मिक रिटर्न की तथ्यीर दिखाई जाती है।

क्योंकि बीमा का असली अर्थ पॉलिसी बेव देना नहीं, जोखिम को अपने ऊपर लेना है।

एक परिवार का कमाने वाला व्यक्ति जब बीमा करता है तो वह अपने लिए निवेश नहीं कर रहा होता, वह अपने पीछे छूट जाने वालों के लिए एक आर्थिक सहाय तैयार कर रहा होता है। इसलिए बीमा ख़ाश की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि कितनी पॉलिसियाँ बेची गईं और कितना प्रीमियम आया। असली सफलता तब होगी जब जिस परिवार ने सुरक्षा खरीदी है, उसे वास्तव में सुरक्षा मिले।

आज जरूरत बीमा कंपनियों और एजेंटों को कटघर में खड़ा करने की नहीं, बल्कि बीमा को फिर से उसके मूल अर्थ, “जीवन की सुरक्षा” तक लौटाने की है। आरक को भी केवल “किटना मिलेगा” नहीं, बल्कि “कितनी सुरक्षा रहेगी” पूछना होगा।

आखिर बीमा वह सोदा नहीं है जिसमें आदमी अपने भविष्य के लाभ कमाने निकलता है। यह वह वादा है जिसमें आदमी अपनी गैर मौजूदगी में भी अपने परिवार के भविष्य को अकेला नहीं छोड़ना चाहता।

बीमा आरक की विषय वस्तु है - जिंदगी के साथ भी और बाद, भी जैसे बड़े बड़े स्वर्गम लिखने से काम नहीं चलेगा जब आरक और कंपनी दोनों इस दिशा में यथार्थवादी प्रयास करेंगे तभी बीमा का सही उद्देश्य पूरा होगा।

वीरेंद्र शिराताल धर्याय खर्तव लेखक



हाशिए से मुख्यधारा तक जनजातीय भाषाओं की आवाज़, 'आदिवाणी' बनेगी संरक्षण और संवर्धन का नया माध्यम

लेखिका रंजना चोपड़ा - रिपोर्ट संतोष कुमार सिंह, परिवहन विशेष समाचार पत्र वाराणसी

रंजना चोपड़ा सचिव जनजातीय कार्य मंत्रालय के द्वारा अपने लेखनी में बताया गया की भारत 700 से अधिक जनजातीय समुदायों और 100 से भी ज्यादा विशिष्ट जनजातीय भाषाओं और बोलियों का घर है फिर भी इनमें से बहुत कम के पास अपनी लिपि, शब्दकोश या ऑनलाइन उपस्थिति है। स्वास्थ्य संबंधी किसी सरकारी परामर्श को पढ़ने की कोशिश कर रहे गाँदी भाषी किसान के लिए या पाठ्यपुस्तक में किसी शब्द को खोज रहे संथाली छात्र के लिए डिजिटल दुनिया ने अब तक उनकी भाषा में बात नहीं की थी। 'आदिवाणी' एक-एक वाक्य, एक-एक रिपोर्टिंग और एक-एक अनूदित पृष्ठ के माध्यम से इस स्थिति को बदल रही है। आदिवाणी एक एआई - आधारित अनुवाद और भाषा प्रौद्योगिकी मंच है जिसे जनजातीय कार्य मंत्रालय (MoTA) के अंतर्गत आईआईटी दिल्ली द्वारा विकसित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य सीधा और स्पष्ट है ऐसे उपकरण तैयार करना जो अंग्रेजी और

हिंदी को जनजातीय भाषाओं के साथ संवाद करने में सक्षम बनाएँ और जनजातीय भाषाओं को भी लिखित और मौखिक दोनों माध्यमों में उनका उत्तर देने की सुविधा दें। आदिवाणी चार भाषाओं - संथाली, मुंडारी, भीली और गोंडी - के साथ लाइव हो चुकी है इसके ठीक पीछे कुई और गारो भाषाएँ हैं जबकि अगले चरण के लिए कातकरी, कोया, कम्बोरोक, बेड़ा, कुरुबा, चोधरी, थाडो कुकी और तांगखुल सहित आठ अन्य भाषाओं को तैयार किया जा रहा है।

सिर्फ एक अनुवादक नहीं, एक संपूर्ण टूलकिट

आदिवाणी केवल एक अनुवादक न होकर एक ही छत के नीचे संपूर्ण टूलकिट उपलब्ध कराती है यह टेक्स्ट-टू-टेक्स्ट ट्रांसलेशन की सुविधा देती है जो अंग्रेजी या हिंदी पाठ को तुरंत जनजातीय भाषा में और जनजातीय भाषा को वापस हिंदी या अंग्रेजी में बदल देता है, स्पीच-टू-टेक्स्ट (ASR), जो बोली जाने वाली जनजातीय भाषा को लिखित रूप में परिवर्तित करता है और ऐसी भाषाओं के लिए जीवनरेखा का काम करता है जिनके पास धाराप्रवाह पढ़ने वाली की संख्या बहुत कम या न के बराबर है, टेक्स्ट-टू-स्पीच, जो लिखे हुए पाठ से प्राकृतिक जनजातीय वाणी (ऑडियो) तैयार करता है ताकि निरक्षर व्यक्ति भी सुनकर जानकारी प्राप्त कर सकें और स्पीच-टू-स्पीच, जो एक ऐसी बहु-चरणीय प्रणाली है जिससे अलग- अलग भाषाएँ बोलने वाले दो लोग लगातार वास्तविक समय में एक-दूसरे की बात समझ सकतें हैं। इस प्लेटफॉर्म में 'ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन' (OCR) की सुविधा भी है जो केवल कागजों पर मौजूद पुरानी पाठ्यपुस्तकों, लोक पांडुलिपियों, प्राथमिक पुस्तकों और शब्दकोशों को डिजिटलाइज करती है-जो अक्सर किसी बोली के अंतिम बचे हुए दस्तावेज होते हैं इसके साथ ही एक सार्वजनिक मोबाइल ऐप और वेब पोर्टल भी उपलब्ध कराया गया है जिसमें निरंतर सुधार के लिए शब्दकोश, सिखने के

मॉड्यूल और फीडबैक तंत्र मौजूद हैं।

हाशिए से मुख्यधारा के केंद्र में लाना

दशकों से भारत की जनजातीय भाषाएँ देश के डिजिटल और प्रशासनिक जीवन के हाशिए पर रही हैं मौखिक इतिहास, पारिस्थितिक ज्ञान और सांस्कृतिक स्मृतियों से समृद्ध होने के बावजूद वे इंटरनेट, एआई प्रणालियों और अक्सर नीतियों से लगभग अदृश्य रही हैं आदिवाणी इस स्थिति को बदल रही है। कल्याणकारी योजनाओं की अधिसूचनाएँ, स्वास्थ्य परामर्श या एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन जो कभी केवल हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध थे अब संथाली या भीली में सटीकता और सम्मान के साथ रूपांतरित किए जा सकते हैं और किसी निरक्षर व्यक्ति को बोलकर सुनाए जा सकते हैं। दूसरी ओर, सरकारी अधिकारी, शिक्षक और स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी यह समझ सकते हैं कि कोई जनजातीय नागरिक अपनी भाषा में क्या कहना चाह रहा है। यह संवाद दोनों तरफ से होता है और यही इसकी मुख्य विशेषता है आदिवाणी सिर्फ जनजातीय समुदायों को मुख्यधारा तक पहुंच प्रदान नहीं कर रही है, बल्कि मुख्यधारा को भी जनजातीय भारत तक पहुंच उपलब्ध करा रही है। यह परियोजना जनजातीय भाषाओं को एआई के लिए केवल डेटा स्रोत नहीं मानती, बल्कि उन्हें मौखिक परंपरा, कृषि, पारिस्थितिकी और सामुदायिक पहचान से जुड़ी जीवंत ज्ञान प्रणालियों के रूप में देखती है।

सिर्फ जनजातीय भारत के लिए नहीं - सभी के लिए एक मंच

आदिवाणी का दायरा केवल जनजातीय परिवारों तक ही सीमित नहीं है। शोधकर्ताओं और भाषाविदों को दुनिया की सबसे कम प्रलेखित भाषाओं के लिए एक प्रामाणिक और उपयोगी डेटासेट मिलता है। जनजातीय जिलों में तैनात सिविल सेवकों, डॉक्टरों, शिक्षकों और एनजीओ के फ़ील्ड कार्यकर्ताओं को (जिनमें से अधिकांश स्वयं जनजातीय नहीं हैं) एक रियल-टाइम अनुवादक

साथी मिल जाता है जो असहज और त्रुटिपूर्ण संचार को एक सार्थक संवाद में बदल देता है। भाषाविज्ञान और नृविज्ञान के छात्रों को ऐसी डिजिटलाइज्ड पांडुलिपियाँ और मौखिक अभिलेखागार मिलते हैं जो अन्याय स्थानीय पुस्तकालयों में बिना देखे नष्ट हो जाते। इसके अलावा प्रत्येक भारतीय को डिजिटल रिकॉर्ड में एक महत्वपूर्ण सुधार का लाभ मिलता है जो भाषाएँ केवल स्मृति में जीवित रहने के खतरे का सामना कर रही थीं अब उन्हें ऑनलाइन संचर करने, बोलने और सिखाने के लिए एक मंच मिल गया है।

यही बात आदिवाणी को एक साधारण अनुवाद ऐप से कहीं अधिक बनाती है यह समावेशन का एक ऐसी सार्वजनिक अवसर है जिसे समुदाय के केंद्र में रखकर तैयार किया गया है न कि केवल एक प्राप्तकर्ता के रूप में।

पहले समुदाय, फिर तकनीक

आदिवाणी की सबसे विशिष्ट पहचान इसके एआई मॉडल नहीं, बल्कि इसकी कार्यप्रणाली है। मूल भाषियों, अनुवादकों, क्षेत्रीय भाषाविदों और समुदाय के वरिष्ठ नागरिकों को केवल एनोटेटर (डेटा विश्लेषक) नहीं, बल्कि ज्ञान भागीदार माना जाता है प्रत्येक डेटासेट एक त्रि-स्तरीय कार्यप्रवाह मेकर -चेकर - सुपरचेकर से होकर गुजरता है जहां समुदाय के समीक्षक उन सूक्ष्म बदलावों को पकड़ते हैं जिनके तहत एआई अक्सर किसी क्षेत्रीय भाषा को हिंदी या अंग्रेजी के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है जैसे कि छूटा हुआ प्रत्यय, अत्यधिक सरलीकृत मुहावरा या पारंपरिक बोलचाल का खोया हुआ लहजा। मशीन द्वारा किए गए अनुवाद को कभी भी अंतिम नहीं माना जाता; मुख्य डेटाबेस में शामिल करने से पहले उसे सुधार के लिए मूल भाषियों के पास भेजा जाता है यह ऐसा एआई विकास है जो सहमति, सांस्कृतिक सम्मान और इस समझ पर आधारित है कि भाषा केवल डेटासेट नहीं, बल्कि किसी समाज की अपनी पहचान को याद रखने का माध्यम

है। यहीं पर राज्य जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (TRIs) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है किसी वाक्य के एआई मॉडल तक पहुंचने से बहुत पहले, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों के TRIs ज़मीनी स्तर पर डेटा संकलन के पूरे प्रयास का संचालन करते हैं वे मूल भाषियों को जोड़ते हैं विभिन्न गांवों और ब्लॉकों में बोली की भिन्नताओं की पुष्टि करते हैं और प्रशिक्षण डेटा में शामिल करने से पहले प्रत्येक अनूदित या लिप्यंतरित नमूने की जांच करते हैं। उनका क्षेत्रीय अनुभव यह वय करता है कि कौन सी रिकॉर्डिंग प्रामाणिक है और अनुवाद में किन मुद्दों का मूल अर्थ खो गया है इस प्रकार वे समुदाय के स्थानीय भाषा और उपयोगी डिजिटल डेटा के बीच पहली जांच कड़ी के रूप में कार्य करते हैं। TRIs द्वारा ज़मीनी स्तर पर की जाने वाली इस सतत समीक्षा के बिना, आदिवाणी के मॉडल में वही विसंगतियाँ आ सकती हैं जिन्हें दूर करने के लिए यह परियोजना शुरू की गई है।

आगे की राह

आदिवाणी का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है अगर ले नही मानीं में इसकी योजना दस और भाषाओं को जोड़ने, अपनी स्पीच रिकॉग्निशन और वॉयस तकनीक को बेहतर बनाने तथा सत्यापित रिकॉर्डिंग का एक बहुत बड़ा संग्रह तैयार करने की है, जिसमें प्रति भाषा सैकड़ों-हजारों रिकॉर्डिंग शामिल होंगी।

आंकड़ों से परे, आदिवाणी एक बड़े उद्देश्य का प्रतीक है यह इस बात का प्रमाण है कि तकनीक जनजातीय भाषाओं को मिटाने के बजाय उनका संरक्षण और संवर्धन कर सकती है ऐसे देश में जहाँ भारत को उन्हे सुनने की एक ठोस वजह प्रदान करती है (लेखिका श्रीमती रंजना चोपड़ा सचिव जनजातीय कार्य मंत्रालय हैं) ।।।